PAGE NO.:
DATE:

DRUG –

according to WHO any substance or product that are used in modified the physiological or pathological state of the recipient, is drug.

PHARMACOLOGY –

is the science that deal with effect of the drug on the living system.

Pharmacokinetics – effect of the body on the drug

Pharmacodynamics – effect of the drug on the body

Pharmacokinetics –
it includes ADME
- Absorbtion
- Distribution
- metabolism
- Excreation

Pharmacodynamics –
it includes
- machanism of action
- Pharmacological action
- adverse effect / ADR

DATE:

Pharmaceutics –

PAGE NO.:
DATE:

रस निरुक्ति –

(1) रसनात् सर्वधातूनां रस इति अभिधीयते।
(2) रसोपरसराजत्वात् रस इतिऽभिधीयते।
(3) रसत्वाद् द्रवरूपत्वात रसः।
(4) जरा रुङ्मृत्युनाशाय रस्यतेवारसोयतः।

रसशास्त्र की परिभाषा or विवेच्य वस्तु (विषयवस्तु)

रसौपरसलौहानि भस्त्रादिकरणानि च
शुद्धमर्थमपि लोहानां तन्त्रादिकरणानि च
शुद्धिः सत्वं द्रुतिर्भस्मकरणं च प्रवक्ष्यते। (RRS 1/19)

a/+ ⇒ according to
c̄ ⇒ with
Δ/Diag. ⇒ Diagnosis
C/O ⇒ Cough and Cold - 3day

entral → oral
parental → through veins or muscular

OD → one in a day
BD → two time in a day
TDS/TiD → 000
QID → 0000
SOS – as per need
Table Spoon → 5ml
Tea Spoon → 2.5ml

रसशास्त्र का क्रमिक विकास

रसग्रंथ	आचार्य	काल	Remark
1- रसरत्नाकर	नागार्जुन	6-8 सदी	5 खण्डो मे विभक्त
2- रसेन्द्रमंगल	〃	〃	रसपर्पटी का सर्वप्रथम वर्णन
3- सौगशतक	〃	〃	
4- कक्षपुट	〃	〃	
5- कुब्जिकातंत्र	〃	〃	
6- रसहृदय तंत्र	भिक्षुगोविंदाचार्य	10 सदी	भवबोध (अध्याय का नाम)
7- रसार्णव	भैरवानन्दयोगी	12 सदी	पटल (chapter name)
8- गोरक्षसंहिता	गोरक्षनाथ	12 सदी	शिव-पार्वती संवाद (1 लाखश्लोक) (पटल) (अध्याय का नाम)
9- रसरत्नसमुच्चय	रसवाग्भट्ट	13 सदी	आधारभूत ग्रंथ (30-chapter)
10- रसेन्द्रचूडामणि	सोमदेव	12 सदी	परिभाषा प्रकाण
11- रसप्रकाशसुधाकर	यशोधर भट्ट	13 सदी	कूपीपक्व रसायन / रससिंदूरकल्प का सर्वप्रथम वर्णन

25. History of Hindu chemistry - Sir PC Roy 20th

26. शार्ङ्गधर संहिता - शार्ङ्गधर - 13th

PAGE NO.:
DATE:

12. आनन्दकन्द	मंथान भैरव	13 सदी	
13. रसपद्धति	बिन्दु	14	
14. रसचिंतामणि	अनन्तदेवसूरी	15	(11) स्तवक (अध्याय का नाम)
15. रसेन्द्रचिंतामणि	ढुण्ढुकनाथ	15	(9) पारद संस्कार
16. रसेन्द्रसार संग्रह	गोपालकृष्णभट्ट	16	
17. रसेन्द्रकल्पद्रुम	रामकृष्ण	16	
18. रसकामधेनू	चूडामणि मिश्र	16	
19. आयुर्वेदप्रकाश	माधव	17	
20. योगरत्नाकर	मयूरपादभिक्षु	18	
21. भैषज्यरत्नावली	गोविंद दाससेन	19	
22. रसतंरगिनी	सदानंद शर्मा	20	
23. रसामृत	मादवजी त्रिक्रमजी	20	
24. पारद संहिता	निरंजन प्रसाद गुप्त	20	
25. रस मंजरी	श्यालिनाथ	16th	

DATE: 25 04 17

Reference - (संदर्भ) => चरक समुच्चय (Chapter 10)
आचार्य रसवागभट्ट (13वी century)

परिभाषा =>

"रसादिद्रव्याणांना प्रमाणम् ज्ञापनं पुटम्
नेष्टोन्नूनधिको पाकः सुपक्वं हितमौषधम् ॥"

(र. र. स. 10/47)

रस आदि द्रव्यो के पाक या भस्मीकरण करने के लिय अग्नि के मान को सूचित करने वाले माध्यम को पुट कहते हैं। न्यून या अधिक पाक करना अभीष्ट नही होता क्योकि भव्य अच्छी प्रकार से पक्व औषधि ही लाभकारी होती है।

पुटक्रम →

collection of Raw drug (best quality)
↓
Shodhan of drug
↓
Bhavana (Specific drug)
↓
Chakrikran
↓
drying
↓
Sarava Samputikran
↓
Phasom

PAGE NO.:
DATE:

पुट संख्या →

Normal Range → (10 - 1000)

① अभ्रक for रसायन = (100 - 1000)
② ~~~ for वाजीकरण = (10 - 500)
③ शंख, शुक्ति, कपर्द = 3
④ ताम्र लौह = (1 - 40)
⑤ (As_2O_3) सौमल

पुट के प्रकार →

① w/r to (according to) source of agni

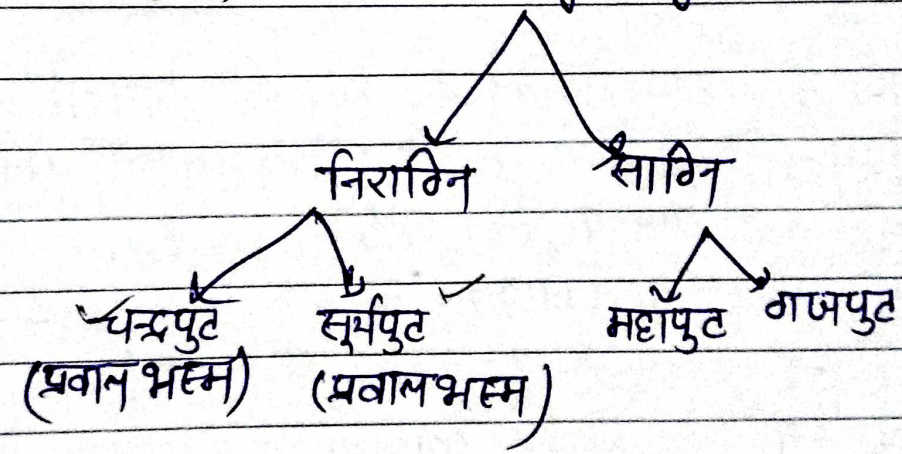

② w/r to use of fuel & Instrument →

(a) गोबर पुट - गोबर
(b) बालुका पुट - बालुका
(c) भाण्ड (मटका) पुट - घट

★ सूर्यपुट → द्रव्य + भावित ~~or~~ लपेटके → सूर्य light में
or भानुपाक or चंद्रपुट कँवारपाठा

* पुट परीक्षा / भस्म परीक्षा –

" अपुनर्भव निश्चन्द्रश्लक्ष्णता सूक्ष्मता लघु
रेखापूर्ण निरुत्थश्च निर्धूममुत्तमं तथा
वारितम् भवामि च निस्वादु मृदुवर्णम्
दन्तैः कर्चेक्यभावं धातूनां भस्मे निर्णयः। "

① अपुनर्भव → यदि भस्म को मित्रपञ्चक के साथ मिलाने पर भी वह अपने पुराने रूप में change न हो।
② निश्चन्द्र → Shining less (चमकारहित)
③ श्लक्ष्ण → चिपचिपी न हो
④ सूक्ष्म → light
⑤ लघु → हल्की
⑥ रेखापूर्ण → हाथ में लेने पर हाथ की रेखाओं में चली जाय
⑦ निरुत्थश्च → चाँदी के साथ अमलगम न बनाय
⑧ वारितम् → जल पर तैरने वाली
⑨ भवामि → वमनकारक न हो
⑩ निस्वादु → taste less
⑪ मृदुवर्ण → light colour
⑫ कर्चेक्यभावं → दाँतो से चबाने पर आवाज न हो

क्र.	पुट	प्रमाण	वन्यौषध (शा.-30)	उपयोग
(1)	महापुट	विहस्त (91 cm.)	1500 500/1000	अभ्रक, लौह, त्रिवंग
(2)	गजपुट	राज्यहस्त (57 cm.)	1000 250/750	ताम्र, लौह, शंख, शुक्ति
(3)	वाराहपुट/क्रोडपुट	अरत्नि	500 150/350	शंख, शुक्ति, वराटिका
(4)	कुक्कुट पुट	2 वित्त	100 30/70	स्वर्ण, रजत, नाग, वङ्ग
(5)	कपोत/स्वल्प/मृदुपुट	1 वित्त	8	पारद, हरताल, शिलाजतु
(6)	लावक पुट	1 पल तुष/गोमय		मृदु द्रव्यों के लिए
(7)	गोमय पुट	1 पल		पारद भस्म
(8)	भूधर पुट	2 अंगुल मिट्टी		पारद, सोमल भस्म
(9)	भाण्ड/मृत-भाण्ड/वुम्भपुट*	तुष		हरताल, सोमल
(10)	वालुभ पुट	वालुका		—

Standrization of Puta

क्र.	पुट	mesaurment	High tem.	time	self cooling time
(1)	महापुट	91×91×91 cm.³	1000°C	1 hr.	10 hr
(2)	गजपुट	57×57×57 cm.³	1000°C	1/hr.	10 hr
(3)	वाराहपुट	42×42×42 cm.³	1000°C	1/2 hr	8 h.
(4)	कुक्कुट	46×46×46 cm.³	1000°C	1/2 hr.	7 h.
(5)	कपोत पुट	23×23×23 cm.³	600°C	1/2 hr.	7 h.
(6)	भूधर पुट	20×20×20 cm³	200°C	1/2 hr.	7 h

Note → a) tem. detecter → pyrometer (non conducting device)

for PY b) Vertical furnace are used – कुपीपक्व सामान

c) Horizontal furnace → भस्म निर्माण

d) diffrance b/w भावना & मर्दन

भावना → with liquide substances

मर्दन → घोटना

e) भावाप / निर्वाप / आच्छादन → धातु को पिघलाकर उसके ऊपर कोई चूर्ण या द्रव्य डालना।

f) निर्वाप / निषेक / स्नपन → धातु को किसी द्रव्य में डालना

g) ढालन → पिघली धातु को साँचे में डालना

PAGE NO.:
DATE:

भावना →

यच्चूर्णितस्य धात्वादिद्रवैः सम्पेष्य शोषणम्
भावनां तन्मतं विज्ञैर्भविना च निगद्यते ॥ (र.त.२/५१)

शोधन →

उदिष्टैरौषधैः सार्द्धं क्रियते पेषणादिकम्
मलविच्छित्तये मन्तु शोधनं तदिहोच्यते ॥ (र.त. २/५२)

मारण →

शोधितान् लौहधात्वादि विमर्द्य स्वरसादिभिः
अग्निसंयोगतो भस्मीकरणं मारणं स्मृतम् ॥ (RT-२)

अमृतीकरण →

लौहादीनां मृतानां वै शिष्टदोषापनुत्तये ।
क्रियते मन्तु संस्कार अमृतीकरणं मतम् ॥ (RT ५/५८)

DATE:

कज्जली :-

"धातुभिर्गन्धिकाद्यैश्च निर्द्रवैर्मर्दितो रसः।
सूक्ष्मश्लक्ष्ण कज्जलाभोऽसौ कज्जलीत्यभिधीयते॥"

यन्त्रोपकरण प्रकरण

PAGE NO.:
DATE:

यन्त्र शब्द की निरुक्ति - / परिभाषा -
स्वेदन, मर्दन आदि कार्यों को करने के लिए तथा पारद को नियंत्रित करने के लिए जिन-२ साधनों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें यन्त्र कहते हैं।

अथवा:
जो पारद को नियंत्रित करने वाले साधन यन्त्र कहलाता है।

" स्वेदादिकर्म निर्मातुं वार्त्तिकैः समन्ततः।
यन्त्रते पारदो यस्मात्तस्माद्यन्त्रमिति स्मृतम् ॥" (R.R.S. 9/2)

यन्त्र →

① उलूखल यन्त्र →

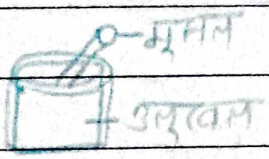

उपयोग → माक्षिक, प्रवालादि को कूटकर चूर्ण करने में।
(या कठिन द्रव्यों)

② खल्व यन्त्र →

24 X 9 X 16 अंगुल
L. W H

use in - सुखपूर्वक पारदादि द्रव्यों के मर्दन करने के लिए

3 type -
(1) अर्द्धचन्द्राकार खल्व
(2) वर्तुल खल्व
(3) तप्त खल्व (मूर्च्छन हेतु सल्फर)

PAGE NO.:
DATE:

③ कच्छप यन्त्र →

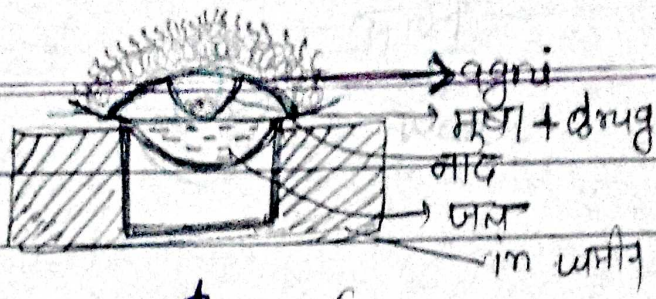

use in → पारद का जारण ✱ मूर्च्छन

④ ~~ऊर्ध्व~~पातन यन्त्र →

use in → पारद के पातन संस्कार में

3 type →

① ऊर्ध्वपातन

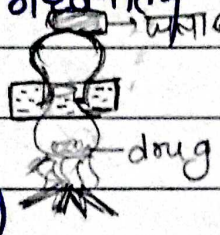

② अधः पातन

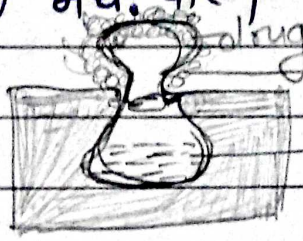

③ तिर्यक्पातन

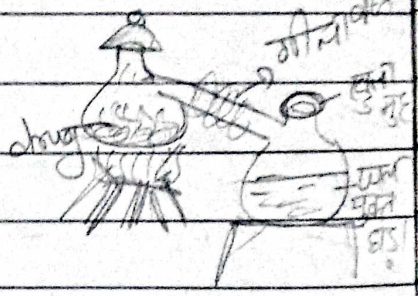

⑤ तुला यन्त्र →

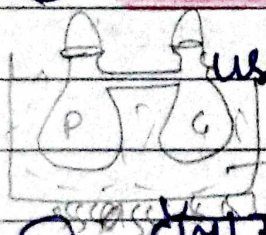

use in - ✱ गन्धक के जारण के लिय

⑥ दोला यन्त्र →

use → किसी भी द्रव्य के स्वेदन के लिय (मन्दाग्नि में)

⑦ डमरु यन्त्र →

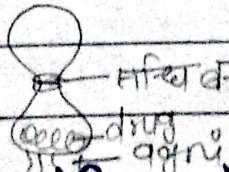

use पारद और सोमिका को उर्ध्वपातन करने में

⑧ विद्याधर यन्त्र → चार मुखो वाला (तीव्राग्नि)

use गन्धक जारण एवं हिंगुल से पारद निष्कासन

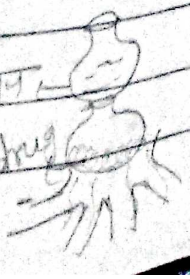

(8) पातान मन्त्र →

use → भल्लातक तैल और विश्वामित्र कपाल स्नेह प्राप्त करने में।

(9) पालिका मन्त्र →

use → गन्धक द्रावण एवं पर्पटी बनाने के लिए

(10) पुट मन्त्र → धातुओं के मारण (भस्मीकरण में)

(11) वालुका मन्त्र → कृपीपक्व रस निर्माण में

(12) भूधर मन्त्र →

use in → गन्धक के अन्तर्धूम द्रावण के लिए

(13) स्थाली मन्त्र →

use in → शोधन एवं धातुओं को मृदु करने के लिए.

(14) स्वेदनी मंत्र → स्वेदन द्वारा धातुओं का शोधन

गन्धक द्रावण – तुला मन्त्र, विद्याधर यन्त्र, पालिका मन्त्र
भूधर मन्त्र (गन्धक का अन्तर्धूम द्रावण)

+ हिंगुल से पारद निष्कासन + पर्पटी निर्माण

कच्छप मंत्र – पारद के द्रावण

दोला मंत्र
स्वेदनी मन्त्र → स्वेदन

डमरू मन्त्र – पारद एवं संखिया को ऊर्ध्वपातन करने में

PAGE NO.:
DATE:

यन्त्र शब्द की निरुक्ति -

→ स्वेदादिकर्म निर्मातुं वार्तिकैर्द्रव्यैः समन्वितः।
यन्त्रते पारदो यस्मात्तस्माद्यन्त्रमिति स्मृतम्॥ (RRS)

→ रसो नियन्त्रते यैन यन्त्र तदिति उच्यते॥

Note point → • रसशास्त्र के विकास के साथ-2 ही यन्त्रो का विकासक्रम हुआ।
• RHT & रसार्णव में सर्वप्रथम यन्त्रो का उल्लेख मिलता है।

→ Pyrometer → is non contacting divice
तापमान मापने के लिय उपयोगी
optical system pe based

मूषा

PAGE NO.:
DATE:

① Refrence → रस रत्न समुच्चय (Chapter - 10)

② निरुक्ति → "मुष्णाति दोषानूमूषेमान् सा मूषेति निगद्यते।" (RRS 10/2)
or definition

अर्थात जिस पात्र के द्वारा द्रव्यों को गर्म करने पर या पिघलाने पर द्रव्य स्थित दोषों को दूर किया जाय, उस मन्त्र विशेष को मूषा कहा जाता है।

③ मूषा के पर्याय →

(मूषा हि क्रौञ्चिका प्रोक्ता कुमुदी करहाटिका।
पाचनी वह्निमित्रा च रसवादिभिरीरिता॥) (RRS 10/1)

क्रौञ्चिका, करहाटिका → मिट्टी प्राप्ति के स्थान
पाचनी → औषध द्रव्य का पाचन करने वाली
वह्निमित्रा → अग्नि के प्रभाव को सहने वाली
कुमुदी → कमल के समान आकृति वाली

④ उपादान घटक → मृत्तिका & लोह

⑤ मूषा के निर्माण हेतु उपयोगी मिट्टी → सफेद, लाल, पीली, बालुका, वल्मीक अथवा कौलाली (कुम्हार की मिट्टी)

सामान्य मूषा → तुष + शण + कोमला चूर्ण + लीद, (1 भाग) + पश मिट्टी

गोस्तनी मूषा - सत्वो को द्रवित एवं शुद्ध करने में
वज्र मूषा - + लौह किट्ट (1/2) सत्वपातन के लिए उपयोगी
मद्यमूषा - अभ्रकसत्व निष्कासन, सत्वद्रावण एवं लौह द्रावण हेतु
योग मूषा - इसमे सिद्ध किया हुआ पारद विशेष गुणकारी
वृन्ताक मूषा - मृदु द्रव्यो के सत्वपातन में
मल्ल मूषा - ~~पर्पटी~~ पर्पटी आदि रसो के स्वेदन में
पक्व मूषा - इसका उपयोग पोटली रस को पकाने में

मूषा के प्रकार -

मूषा	प्रमोज्य सामग्री	उपयोग
वज्र मूषा	3 भाग मिट्टी + 2 शण + 2 लीद + 1 कुम्भतुष + 1 खडिया (चूना) + 1/2 लौह किट्ट	* कठिन द्रव्यो का सत्वपात ex. - अभ्रक, हि
मल्ल मूषा / पक्व मूषा	2 सराव सम्पुटक	पर्पटी आदि रसो का स्वेद
गोस्तनी मूषा	गाय के स्तनाकार समान गोल एवं लम्बी मूषा	सत्वो को द्रवित करने के लिए शुद्ध करने के लिए द्रव्य बाहर नही आता
गोल मूषा	निर्वक्त्र (मुखरहित मूषा)	
वृन्ताक मूषा (वैताक	ऊर्ध्वभाग - धतुरपुष्प के समान + 12 अंगुल की नली लगी हो + मूषा की आकृति वृन्ताक (बैंगन के समान होते	* पर्पटि आदि मृदु द्रव्यो का सत्वपातन

योग मूषा → द्रव्य → कोमले एवं तुष की राख + काली मिट्टी + वल्मीक मिट्टी + विड द्रव्य (समान भाग)

(7) वज्रद्रावण मूषा	भूनाग मिट्टी से बनी + सुगंध वाला + नागरमोथा	प्रमाण (16 मात्र) प्रयोग तक अग्नि सह
(8) महामूषा	तल → कर्पूराकार स्थूल वृत्तांडु के समान दिखे	अभ्रक सत्व निष्कासन + सत्वद्रावण
(9) गार मूषा	लौह विट् (मण्डूर), कोमला, मिट्टी	2 प्रहर (3 hr) तक की अग्नि सहन
(10) वर मूषा	—	1 प्रहर तक की अग्नि सहन or 1 याम or 3 hr.
(11) वज्र मूषा	रक्त वर्ग के द्रव्यों की भावना से निर्मित एवं फिटकरी और कासीस का से लेपकर	
(12) विण् मूषा	दैह लौह कर योग	
(13) ★ मण्डूक मूषा	प्रमाण → 6 × 6 × 6 अंगुल	
(14) ★ मूसल मूषा	8 भगुलाकार, मस्द +	पारद बंधन में उपयोग

महामूषा → ऊपरी भाग - विस्तृत तथा देखने पर मोटे वृंगन के समान स्थूल दिखे
निचला भाग - तलभाग कर्पूर सदृश संकीर्ण

उपयोग - अभ्रक सत्व निष्कासन, सत्व को पुट देने के लिए सत्वद्रावण, लोहद्रावण हेतु use

PAGE NO.:
DATE:

according to morden -

Crucible are the specified container with the resist of very high tem. and used for the metal, glass and pigment production. Crucible are made up of graphite, porcilin, Abrak (Ab) (mica) Pagli ladki and high boiling P & M.P. Container.

ideal Crucible having charactiristics →

1- high boiling point
2- ~~—~~ Melting Point
3- resistance

uses of Crucibles -

1- Crucibles are used in laboratories for chemical analysis, chemical composition determination, purification of raw drug.

2- for extractation metal from compound (मलयपातन)

3- to determine the ash value.

Note
⇒ In now days crucible are made up of alburmin Pt, Ni, Zr, etc.

मूषा का आधुनिक स्वरूप –

मूषा एक विशेष पात्र है। जिसका उपयोग धातुओं को द्रवित करने होता है। इसलिए जिस धातु को द्रवित करना हो, उस धातु के melting point से अधिक तापमान को सहन करने वाली मूषा का प्रयोग करना चाहिए।

घटक →

① सामान्यतः Clay Graphite & Bonded silicon Carbide का use

② ये अधिकतम तापमान को सहन कर सकते हैं और टिकाऊ भी हैं।

type or आकार –

Bilge shape	A shape
• Barrel shape की • इसका तल एवं ऊपरी भाग Bilge की अपेक्षा छोटा	• A shaped crucible आस तल से ऊपर की ओर निरन्तर बढ़ा हुआ है • यह सस्ता होता है।
1510°C तक सहन	1500°C तक सहन

सावधानी - ① मूषा के साथ अनुकूल एवं सही fitting के चिमटे का करना चाहिए।
② अलग-2 धातु के लिए अलग-2 मूषा use
③ use के बाद मूषा को clean करके रखना चाहि
④ नमी दूर करने के लिए 500°F पर 20 mint गर्म → क्वार्ट्ज तप्त → स्वांगशीत
नहीं तो नमी की वजह से मूषा टूट सकती है।

Silica Crucible

① शुद्ध Si से निर्मित
② विस्फारक गुणांक ↑
इसलिए शीघ्र गर्म और शीघ्र शीतल करने से टूटने का भय नहीं रहता।
③ HCl, क्षुद्र धातु oxide, फास्फोरिक acid का हाइड्रा सबके लिए निष्क्रिय
पारदर्शी होने के कारण इसमे की जाने वाली प्रक्रियाओं को आसानी से देखा जा सकता है।

Pt Crucible

Pt निर्मित
उच्च तापमान & m.p. होते है
O_2 एवं Air की उपस्थिति में ऑक्सीकरण प्रतिरोध
अम्ल & क्षार विलयन में संक्षारण प्रतिरोध

रसशाला

PAGE NO.:
DATE:

संदर्भ → RRS - 7th Concept of rasshastra

morden corelation → drug and cosmetic act 1945 - gmp (Good manufracturing prod

परिभाषा →

मौलिक सिद्धांत → स्थान
भवन
कार्यविभाजन

• रसशाला वह स्थान होता है जहाँ पर औषध निर्माण कार्य व रसौषधियों को विभिन्न क्रियाओ जैसे मारण → ध्मान आदि कार्यो का समपालन किया जाता है।

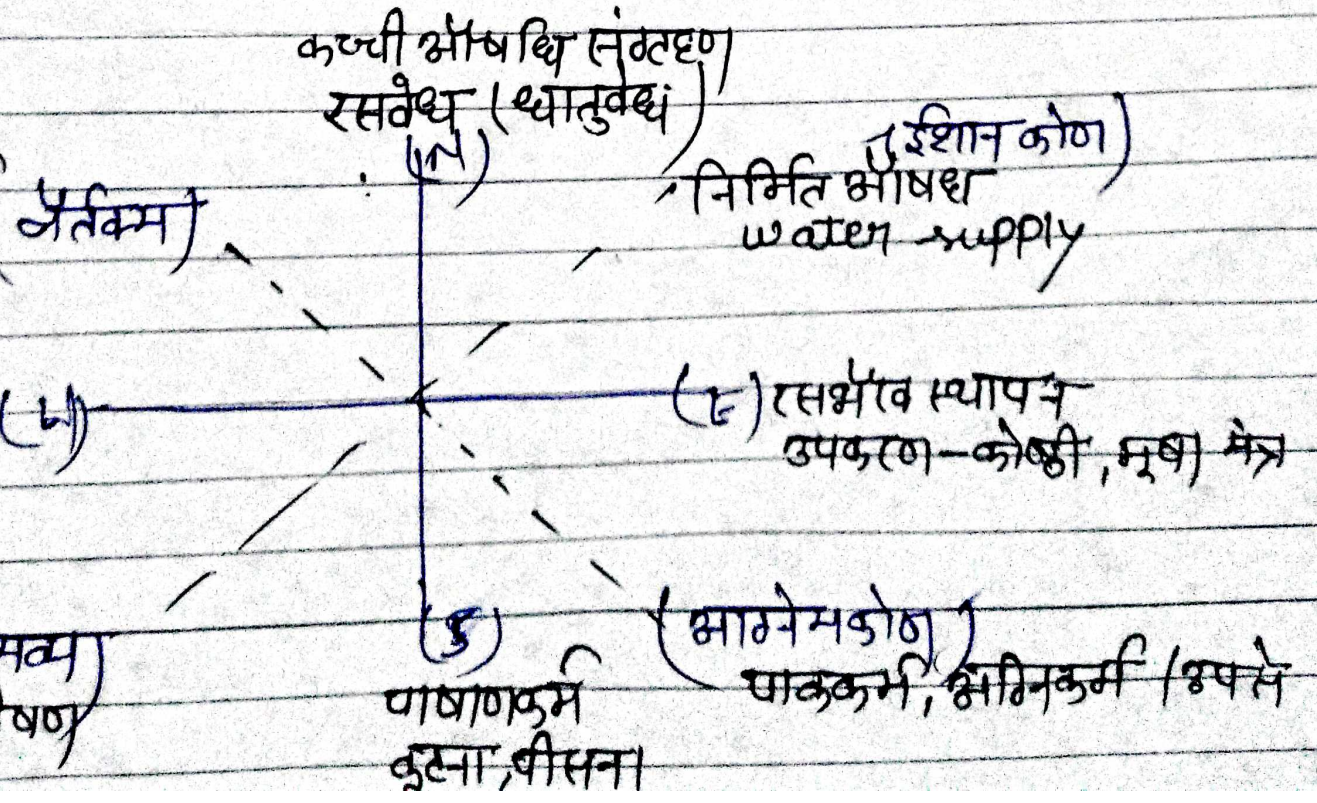

कूपीपक्व रसायन

PAGE NO.:
DATE:

Defi.→

"कुप्यामं अग्निनां पक्वं मद्रसायनं तत् कुपीपक्वं रसायनं"।

इतिहास → 13th century यशोधर भट्ट ने रसप्रकाश सुधाकर में रससिंदूर का 'उदयभास्कर' रस में वर्णन किया।

- 13th century में ही यशोधर भट्ट ने रसकर्पूर का 'घनसार' नाम से वर्णन किया है।
- रसकौमुदी, आयुर्वेदप्रकाश, रसतरंगिनी, रसयोग सागर में कुपीपक्व रसायन का वर्णन किया है।

कुपीपक्व रसायन

संगंध
- P+G → रससिंदूर
- P+G + धातु → ताम्रसिंदूर
- P+G + अधातु → मल्लसिंदूर
- P+G + अधातु + स्वर्ण → पूर्णचन्द्रोदय रस

निर्गंध
- रसपुष्प
- रसकर्पूर

PAGE NO.:
DATE:

② कूपीपक्व रसायन

- अंतर्धूम
  - तलस्थ (~~समीरपन्नगरस~~ रससिंदूर)
    - कच्छपयंत्र / बालुका यंत्र
      - Slow process
- बहिर्धूम
  - कंठस्थ
    - बालुका यंत्र
      - Fast process

③ कूपीपक्व रसायन

- कंठस्थ / गलस्थ (रससिंदूर, रसकर्पूर, मल्ल सिंदूर)
- तलस्थ / अधःस्थ (समीरपन्नगरस, रससिंदूर)
- ऊर्ध्वस्थ (पूर्णचन्द्रोदय रस, माणिक्य रस)

Req. material - कॉचकूपी, वस्त्र, मुलतानी मिट्टी, कूपी स्टैण्ड, बालुका यंत्र, बालुका, लौह शलाका, अग्निभट्टी मुख, चाकू

Process ⇒

Pre-Heating	Heating	Post heating
Prepare of कॉचकूपी (7 layers of मुल्तानी मिट्टी)	Stage of मृदुग्नि (0-250°c)	Self colling (ठंडा at least 24hrs
↓	↓	↓
filling of material in कॉचकूपी (1/3 Part)	stage of मध्याग्नि (250-500°c) 6hr.	removing of कॉचकूपी from वालुका यंत्र
↓	↓	↓
Sealing of mouth of कॉचकूपी or मुद्रण	Closing of mouth of कॉचकूपी for वर्द्धिधूम कूपीपक्व रसायन	Breaking of कूपी
↓	↓	↓
fixation of कूपी in वालुकायंत्र	stage of तीव्राग्नि (500°c ← 1000°c) 4hr	Collection of material

- वर्द्धिधूम कूपीपक्व रसायन के लिय कूपीपक्व मुद्रण इसे ही मदनमुद्रा या हठमुद्रा कहते है।
- मध्याग्नि तक की प्रक्रिया अंतर्धूम के समान ही है। उसके पश्चात् कूपी का मुद्रण करते समय निम्न परीक्षा करनी चाहिए।

(a) कूपी से गंधक की गंध निकलना बंद हो जाय या ज्वाला शीत हो जाय।

(b) कूपी के तल पर रक्त वर्ण का प्रतीत होना।

(c) कूपी के मुख पर torch से light डालने पर Hg के कण उठते हुए प्रतीत होते हैं।

(d) Cu coin test ⇒ Cu coin को कूपी के मुख पर रखने से उस पर पारद के कण चिपक जाते हैं जिससे वह श्वेत हो जाता है।

(e) कूपी में तप्त शलाका डालने पर कज्जली नहीं लगती है।

ex. of कूपीपक्व रस	घटक द्रव्य	भावना द्रव्य	मात्रा	प्रयोग
(1) रससिंदूर — in syllabus	शुद्ध पारद - 1 भाग शुद्ध गंधक - 1 भाग	बटांकुर स्वरस 1 भावना	1-2 रत्ती	रसायन, प्रमेह वाजीकरण स्थूलता, श्वेत कोढ़
(2) रसकर्पूर ($HgCl_2$)	शु. पारद - 1 शु. गंधक - 1½ भाग सैन्धव लवण - 1		1/64-1/32 रत्ती or 2-4 mg	अतिसार, प्रवाहिका कृमि, विषघ्न
(3) रसपुष्प	शु. पारद शु. कासीस सैन्धव लवण (समभाग)		1-2 रत्ती	फिरंग रोग (Syphylis)

5) समीरपन्नग रस	शु. पारद, शु. गंधक सैंधव, हरताल मनः शिला (समभाग शुद्ध)	तुलसीपत्र स्वरस भावना	1-2 रत्ती	सन्निपातज व्याधियाँ, ज्वर वातव्याधि, कफज रोग
6) मकरध्वज / चन्द्रोदय / स्वर्ण सिंदूर	शु. स्वर्णपत्र - 1 द्विगुलोत्थ पारद - 8 शु. गंधक - 16	बंटादुर स्वरस घृतकुमारी स्वरस	1-2 रत्ती	सामान्य, स्मृति बुद्धि, शतीर कोतिवर्धक, आयु, वाजी कर
6) सिद्धमकरध्वज या पूर्णचन्द्रोदय रस	स्वर्ण - 4 पारद - 8 गंधक - 10	कंटकारीस स्वरस	1-2 रत्ती	सामान्य, स्मृति आयु & बुद्धि शतीरकोटि वाजी *
7) स्वर्णवङ्ग. * स्वर्ण नहीं लेते	पारद - 1 गंधक - 1 वङ्ग - 1 सूर्यक्षार - 1/2 नवसादर - 1		1-2 रत्ती	सामान्य मधुमेह श्वास कास वाजी *

PAGE NO.:
DATE:

मुद्रा

जब पारद की मूर्च्छना या जारण करते हैं। तो पाक दानी पर कौंच की शीशी या मूषा के ~~बन्द कर~~ मुख को बंद करना ही मुद्रा कहलाता है।

मदन मुद्रा

घटक -

वटवृक्ष दूध + गूलर दूध + लाक्षा
(1-1 पल)
+
1 पल चुम्बकीय लौह
+ अलसी तेल

विधि ⇒

↓

in इमामदस्ता

↓

कूटने पर मोम जैसा पदार्थ (मदन मुद्रा) प्राप्त

दृढ मुद्रा

घटक -

चुम्बकीय लौह
+
सुमट रक्त
} समान मात्रा

↓ in इमामदस्ता

सूर्यास्त से सूर्योदय तक कूटने पर मोम जैसा पदार्थ प्राप्त

↓

दृढमुद्रा प्राप्त

use - पारद जारण में द्रवी मुख को इसी से बंधन करते हैं।

सन्धिबंन्धन - दो पात्रों के संधिस्थान को जोड़ना संधिबंन्धन

द्रव्यस्वरूप → मण्डूर चूर्ण + मिट्टी

पर्याय - बन्धन • संधिबंधन, मन्धण, रन्धण, संश्लिष्ट

— पारद प्रकरण —

PAGE NO.:
DATE:

⇉ Physical properties –

Symbol – Hg
English name – Hydro Giyrum
Atomic No. – 80
Atomic weight – 200
Specific gravity – 13.56
Relative index – 12.59
जल से 13.5 गुना भारी
Melting point – (–35.87°C)
Boiling point – 357.25 (630.25K)
freezing point – (–36°C)
Binding capacity – 2

⇉ chemical properties –

- Does not effects on HCl
- No effects of dil HCl
- soluble in conc. H_2SO_4
- Melt in dil. HNO_3
- highly soluble in conc. HNO_3
- soluble in aqua regig

- When drychuration with sulphur, chalk, powder, Oil, sugar or other compound than it will be convertate in fine particles

PAGE NO.:
DATE:

पर्यायि – (सभी शंकर जी के पर्याय)

(Imp) ⇒ अमृत, गलद, रौप्य, निभम (quick silver), सुवर्ण, महातेज, महावह्नि, रसायन, सौभाग्य, अचिन्त्य, हरबीज, हरतेज, शान्त*,

[Note → सौभाग्य – सुहागा और टंकण का भी पर्याय है]

Classification of पारद ⇒

क्षेत्रीकरण* के अनुसार पारद के पाँच भेद हैं →

① रस (2) रसेन्द्र (3) सूत (4) पारद (5) मिश्रक

पारद के प्रमुख पाँच पर्यायो या भेदों की निरुक्ति ⇒

(1) रस ⇒

रसनात् सर्वधातूनां रस इत्याभिधीयते।
जरारुङ्मृत्युनाशम् रस्यते वा रसो मतः ॥ (र.र.स.1/76)

अर्थात् → स्वर्ण आदि सभी धातुओ एवं अभ्रकादि महारसो का भक्षण करके धातुओं की शक्ति स्वयं में लेने के कारण ही इसे रस कहते हैं। जरा, रोग, मृत्यु आदि को नष्ट करने में समर्थ होने के कारण इसे रस कहते हैं।

"मम देह रसो यस्मात् रसस्तेनाभमुच्यते"। (रसार्णव 1/36)
अर्थात शिववीर्य होने के कारण इसे रस कहते हैं।

(2) रसेन्द्रः -

"रसोपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इति कीर्तितः।" (र.र.स. 1/76½)
अर्थात् →
रसो एवं उपरसो का राजा होने के कारण इसे रसेन्द्र कहते हैं।

(3) सूतः -
देहलोहक्षमी सिद्धिं सूते सूतस्ततः स्मृतः। (र.र.स 1/77)

अर्थात् - देहसिद्धि एवं लौहसिद्धि को देने वाला होने के कारण इसे सूत कहते हैं।

(4) पारदः -

रोगापङ्काब्धिमग्नानां पारदानाच्च पारदः।
(र.र.स. 1/77½)

अर्थात् रोगरूपी कीचड़ वाले समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों को पार करने वाला होने के कारण इसे पारद कहते हैं।

PAGE NO.:
DATE:

⑤ मिश्रक -

सर्वधातुगतं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति।
तस्मात् स मिश्रकः प्रोक्तो नानारूपफलप्रदः॥ (र.स. 1/2)

अर्थात् पिण्डमे सभी धातुओ का तेज मिश्रित हो, उसे मिश्रक कहते है तथा इसे अनेक प्रकार का फल देने वाला कहा गया है।

पारद पुष्प।

⇒ 5 types →

① धमन
(2) स्पर्श
(3) दान
(4) मूर्च्छन
(5) सेवन

⇒ पारद सेवन परिणाम -
⇒ मूर्च्छित पारद - व्याधिनाशक
⇒ बद्ध पारद - मोक्ष

⇒ पारद का बंधन - अभ्रक (सूतस्य बंधक)
⇒ प्राणो रसे द्रुस्य - माक्षिक
⇒ सूतेन्द्रवीर्यप्रद - टांकण

DATE:

पारद

- मुक्तावस्था (native Hg)
  - → गलदरौप्यनिभम्
  - → quick silver / liquid silver
- यौगिक (ores Hg) (compound)
  - दिंगुल (HgS) (cinnabar)
  - Red sulphide Hg
  - 70-80% Hg

यौगिक पारद के भेद-

(1) दिंगुलत्याद पारद (cinnabar - HgS) (78-80% पारद)
⇒ जपापुष्प, सकासम इसपाद के समान

(2) मेरा सिन्नेबार (HgS)
⇒ कृष्णवर्ण मुक्त

(3) प्रवालाभ दिंगुल (corallineore)

(4) दैत्मेद्र वक्त (steel ore) (75% Hg)

(5) दरद दिंगुल (यकृदाकार) (Hepatic cinnabar)

(6) गिरिसि-दूर (Brick ore) (68% Hg)
⇒ Red ~~oxiride~~ oxide of Hg.

(7) Calomel (Hg_2Cl_2)
⇒ श्वेतवर्ण (due to Cl) / हीरक द्युतिसंकाश

(8) Living Stonite ($2Sb_2S_3HgS$)
⇉ यह antimony, Hg, S compound है।

(9) Barsenite
(10) mojesite

पारद के दोष

⇉ पारद में दोष मधदेव ने इंद्र के कहने पर मिलाया।

⇉ दोष संख्या – RRS मुख्य (5) *
कुल (12)

RT – (08)

भानुप्रकाश। – (20)
रसप्रकाश। सुधाकर / रसकमधेनु – (2)

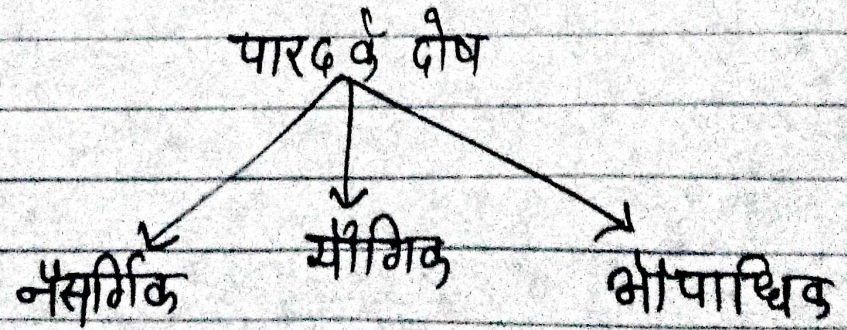

नैसर्गिक दोष →
(natural effect)

① विष - मरण
(2) वह्नि - संताप
(3) मल - मूर्च्छा

यौगिक दोष →
(Physical / Artificial)

(1) नाग - जडता / ~~अश्मान, कुष्ठ~~ RRS
(2) वंग - आध्मान / कुष्ठ

⇒ औपाधिक / सप्तकुंचन दोष —

कंचुक नाम (Physical)	कार्य (रसे. चू.)	र.त. सं.
- भूमिज	कुष्ठ	पर्पटी
- गिरिज	जाड्य	पातनी
- वारिज	वातव्याधि	भेदी
- नागदौ	धातु क्षति कर मलवृद्धि	द्रावी
- वंगदौ	स्वरवाक्पटुत्व (काकस्वर)	मलकारी
		अधकारी
		ध्वांसी (स्वरध्वंस)

⇒ अन्य दोष —
अमदाग्नि - 360 BP (Ca मिलाने पर - BPL)
चापल्य - चपल (Bi मिलाने पर - BPL)
मद - उन्माद

पारद का सामान्य शोधन -

② a/to RT (5)
कुमारी + चित्रक + खत्तसर्षप + गुडूची + त्रिफला क्वाथ + Hg
↓ मर्दन (3day)
सप्तमल रहित शुद्ध पारद

- पारद की गतियाँ -

according to RRS →

पारद की पाँच गतियाँ होती हैं।

Rt
प्रथ
(1) जलगति
(2) हंसगति
(3) मलगति
(4) धूमगति
(5) जीवगति

③ RT - (5)
नागवल्ली स्वरस + आर्द्रक + स्व. क्षारद्रव
मर्दन | 3day
↓
अम्ल प्रक्षालन
↓
मुक्ता समान चमकदार Hg

Book - page No. - 137

पारद का ग्राह्य स्वरूप

ग्राह्य - अन्तः सुनीलो वहिरुज्ज्वलो मौ मध्याह्न सूर्यप्रतिमप्रकाशः।
अग्राह्य - शास्त्रोऽथ धूम्र परिपाण्डुरश्च चिन्नो न मोज्यो रसकर्मसिद्धौ॥
(रस मंजरी 1/15)
(आ. शालिनाथ)

पारद शोधन

सामान्य (रोगनाश हेतु)

1) विधि → a/to → RT (5)
Hg - 1 part
पूति - 1 भाग)
लहसुन - 1 भाग)
सैंधव - 1/2 भाग)

विशेष शोधन
(सप्त गुण प्राप्ति हेतु)

विधि → Hg मर्दन + धूप / 3day → Hg + उपरोक्त द्रव्य → मर्दन / कृष्ण वर्णहीनत्व → कृष्णवस्त्र प्रक्षालन → Hg शोधित

④ RT (5)
लहसुन + सैंधव + Hg → 7day in तप्तखल्व मर्दन → प्रक्षालन → Hg

- पारद संस्कार -

PAGE NO.:
DATE:

संदर्भ - RHT (रसहृदय तंत्र)
RRS
AP (आयुर्वेद प्रकाश)
AK & आयुर्वेद के सभी ग्रंथो मे वर्णित

संख्या - (18) RRS
(19) रसेन्द्रचिंतामणि
(19) आयुर्वेद प्रकाश

No Due

शोधन & संस्कार मे अंतर -
शोधन → शोधनं दोषहरणं संस्कारश्च बलतेजोंऽसोऽग्निवर्द्धनम् ।

संस्कार → संस्कारो हि गुणान्तराधान मुच्यते -
ते गुणास्तोयाग्निसन्निकर्ष शौचमन्यत्वदेशकालै
वासनभावनादिभिः कालप्रकर्षभजनादिभिश्चाधीयन्ते ।

- संस्कारउपयोगी पारदमान - (RRS)

Max → 2000 पल, 1000 पल, 28 पल, 10 पल, 5 पल, 1 पल
Min → आधा पल 1/2

PAGE NO.:
DATE:

पारद के 18 संस्कार (according to AHT)

स्वेदनमर्दन मूर्च्छोत्थापन पातन निरोधनियमाश्च
दीपनं गगनग्रास प्रमाणमथ चारणविधानंच
गर्भद्रुति बालद्रुति जारण रसराग सारणं चैव
क्रामणं वेधो भक्षणम् ष्टादशथ थेति रसकर्म (RHT)

+1 (अनुभासन) =19

आवश्यक सामग्री –
श्वेतौमंत्र, स्वेद तप्तखल्व, दौला मंत्र, घृतमन्त्र, कॉजी, पातनमंत्र सूतीवस्त्र आदि।

संस्कार की वर्गीकरण –
पारद के 8 संस्कार हेतु मुख्यतः अष्टसंस्कार ही प्रयुक्त किए जाते है।
(1) स्वेदन (2) मर्दन (3) मूर्च्छन (4) उत्थापन (5) पातन (6) निरोध/शोधन/बोधन
(7) नियमन (8) दीपन

- पारद के इन अष्टसंस्कारों में से एक से पाँच संस्कारो से पारद के सर्वदोष दूर हो जाते है।
- शेष 6 से 8 संस्कारों द्वारा पारद में बल एवं तेज की वृद्धि होती है।

पारद संस्कार हेतु कांजी निर्माण–

सामग्री – चावल, उड़द, मेंथ (1-1 भाग)
+ राई (1/2 भाग)
हिंगु, जीरा, शुण्ठी (1/10 भाग)
हरिद्रा, बाँस पत्ती (1/4 भाग)
सरसों तेल (1/5 भाग)
कुलत्थ क्वाथ (आवश्यकतानुसार)

↓

सभी द्रव्यों को सन्धान पात्र में 3/4 रखकर

↓

~~सन्धान पात्र का शराव सम्पुट~~

↓

ग्रीष्म ऋतु में 10-15 day
शीत ~~—~~ 20-25 day

Note→ काँजी → धान्य, माण्ड आदि की सन्धान कल्पना
मासार → निष्पुष, गेहूँ का सन्धान
द्रुवत → कन्दमूल सन्धान

PAGE NO.:
DATE:

Rasa

Sr.	संस्कार	English Name	संस्कार फल / परिणाम
1.	स्वेदन	Vapouring process	मलशैथिल्यकारकम्
2.	मर्दन	Grinding	बहिर्मलविनाशनम्
3.	मूर्च्छन	Swooning	नष्टपिष्टकारकम् मूर्च्छां सर्वदोषविनाशकम्
4.	उत्थापन	Reviving	मूर्च्छामपनिनाशनम् /कंचुकापहरणम्
5.	पातन	Distillation / Sublimation	नागवङ्गशुंकामुक्ति रसानने सौम्यो अधः पातन
6.	निरोध / बोधन रोधन	Regain lost potancy	षण्ढत्वनाशनम् (Potancy ↑) महामुखकर
7.	निर्मलन	To make Hg Agni-sahya	चपलत्व निवृत्तये
8.	दीपन	↑ Digestion of Hg for quick effectiveness	दीपनं तेजवृद्धि / शीघ्रार्थी

संस्कार	सिद्धांत	मंत्र	समय	प्रक्रिया
स्वेदन	स्वेदन	दोलायंत्र	3days	Hg + 1/16 each शुण्ठी / मरिच / पिप्पली / अदरक शर्पिका / मूलिका / चित्रक / लवण → make kalka → in potli → दोलायंत्र 3day in काञ्जी → wash with Hot water
मर्दन	मर्दन	खल्व यंत्र	3day	Hg + 1/16 each + इष्टिका / हरिद्रा / धत्तूरम् / शर्पिका सेन्धव / गुड / काञ्जी (if require)
मूर्च्छन * नाग वर्ण होने तक मर्दन	मर्दन	तप्त खल्व यंत्र	5-7day	Hg + 1/16 चित्रक / त्रिफला / कुमारी → wash +
उत्थापन	स्वेदन / आतप / प्रक्षालन	दोला यंत्र / पातन	Till Hg regained	• Hg + काञ्जी → दोलायंत्र स्वेदन → wash • Hg + आतप → Dry in sunlight
* पातन	पातन	ऊर्ध्व / अधः / तिर्यक्पातन	for specific time	ऊर्ध्वपातन → Hg + 1/4 शोधित ताम्र → पातन → wash अधःपातन → ऊर्ध्वपातित Hg + 1/4 शोधिततास्र → पातन → wash तिर्यक्पातन → अधः पातित Hg + 1/4 ताम्र → पातन → wash
* रोधन	पातन	घृतमंत्र	3day	Hg + सूक्ष्मचूर्ण (संधवनमक 1:5) → घृतमंत्र 3day → Hg का खरल

* Que किस संस्कार में ताम्र भस्म का use?

निमन	स्वेदन	दौलामंत्र	3day	Hg + 1/16 शृंगराज + वन्थमाककोटी + सैन्धव + ताम्बुल / लहसुन $\xrightarrow[\text{कल्क 3day}]{\text{D-Y.}}$ → wash
दीपन	स्वेदन	दौलामंत्र	3day	Hg + 1/16 राणिका / नागिनी / शिवनु / स्फटिका कासीस / टंकण $\xrightarrow[\text{कांजी}]{\text{कल्क}}$ Dola yantra → wash

Nick → BB से तालमेल नियमित रूप से रखना चाहिए ।

राम ने शिक्षा दी ।

वटी कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

Ref.- शा० सं० म० ख०

वटीकल्पना - कल्क कल्पना में आती है।

पर्याय - गुटिका / वटिका / मोदक / गोली / चक्रिका / पिण्ड / गुड* / वर्ति*

निर्माण विधि → fine powdered of all Ingredient
↓ भावना / स्वरस / क्वाथ
Trituration till Pick up
↓
make pills a/to size needed

अनुपान - उष्णोदक / मधु / घृत / क्वाथादि

* प्रक्षेप द्रव्य - गुड → 2 गुना / चीनी → 5 गुनी } गुग्गुल / मधु / सर्पि - समान मात्रा वटी में भी यही

मात्रा - 1 कोल 'मा' 1 वर्ष - (10-12g.)

Note → चूर्ण कल्पना में ↓ गुड - 1 गुना, चीनी - 2 गुना
मोदक द्रव्य

Tablet

PAGE NO.
DATE

delination → • Tablet is a solid unit dosage form.
• Tablet is a medicament (medical compound) with or without suitable dilute prepared by molding or compression method.

• Tablet are many shape, size and weight mostly round, oval, sylinderical, square, and tringular in shape.

Charcteristic of ideal tablet:-

• ~~agu~~ accurate in shape and size.
• uniform in ~~weight~~ weight.
• not to be Hard.
• easy for ~~adultration~~. administration.
• Physical & chemical stable.
• attraction in apperance.
• economicaly cheap.

Types of tablet:-

Compressed tablet	Molded tablet
• oral tablet ex-paracitamol	• Hypodermic tablet
• Sublingual tablet (use in quite Heart attact) ex-nitroglycerin, mainly nitrate form)	• dyspansic tablet (ex. dyspirin)

- soluble tablet
- entric coated tablet
only effects in Instistine
- sugar coated

formation of Tablet:-
Tablet = active ingreatant + addititives

additives → may be liq., binder (starch is the best) colouring agents, lubricants, flavouring agent, preservatives.

Method of preparation of tablet:-
- direct compression
- size punching machine
- multi punch machine
- rotatory tablet machine
- dry granulation
- wet granulation

Tablet Coating -
- sugar Coating
- entric Coating
- ~~filt~~ film coating

PAGE NO.:
DATE:

- ~~adv~~ advantage of tablet -
  - easily ~~swall~~ consume
  - easily ~~carring~~ to carry
  - painless
  - fix dose
  - no requirement for assistant
  - low cost
  - large scale production

disadvantage of tablet -
- not use in emergency condition's.
- ~~unco~~ can't use in unconscious patient
- will react to moisture.
- bitter in test.
- Compairly low absorbable the enjection.
- Compar~~ativ~~irly large amount than enjection.

जारण / जारणा

Ref :- आयुर्वेद प्रकाश
रसतन्त्र
RHT (सर्वप्रथम गंधक जारण वर्णन)

परिभाषा :-

- द्रुत द्रव्य क्षय एवं जारणा।
- जारणादि नाम गालन पातन व्यतिरेकेन।
  तत्तत् धन हेमादि रसस्य पूर्वस्तव्या व्यतिपन्नत्वम्॥

def :→ Process of digestion in which metal and ore mineral oet absorb in mercury without changeing the original form of Hg that means no weight gain or no weight loss.

जारण क्रम :→

गंधक → अभ्रक → स्वर्णमाक्षिक → स्वर्ण → नाग → वंग → लो

जारण हेतु उपयोगी यंत्र →
कच्छप, वालुक, मूषर, सोमल, गजपुट, डोलिका, पातिकायंत्र

PAGE NO.:
DATE:

प्राणफल :—

① समभाग - रोगनाशक
② चतुर्गुण - देहवाद
③ षड्गुण - लौहवाद

प्रारण भेद :—

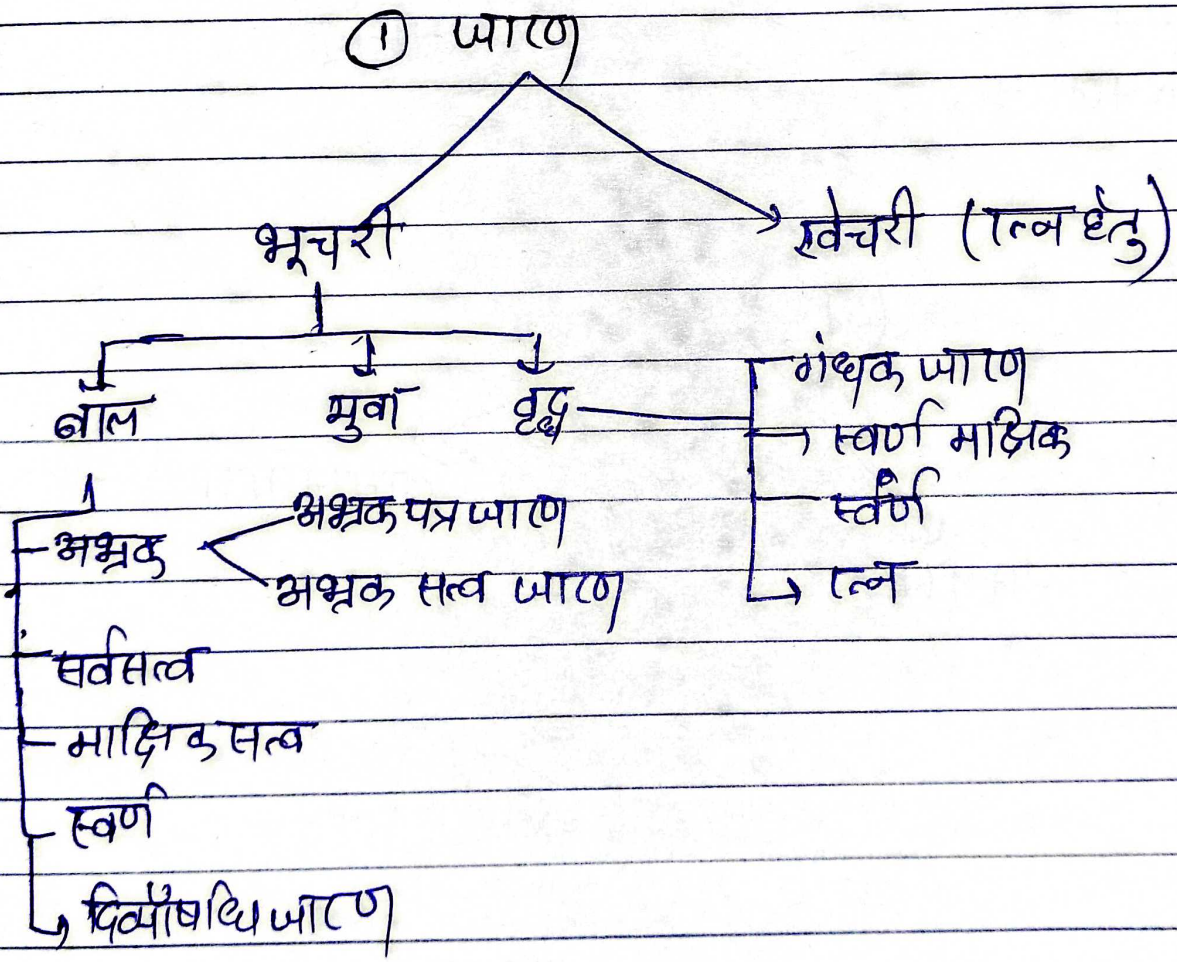

(2) प्रारण

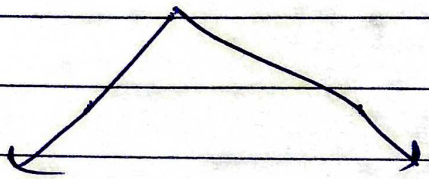

अंतर्धूम

Slow process

→ कच्छपयंत्र / बालुका
→ स्वत्व यंत्र
ex - समीरपरमास

बहिर्धूम

~~fast process~~

बालुका / शिष्टका / स्वत्व

ex - रासिंदूर

(3) प्रारण

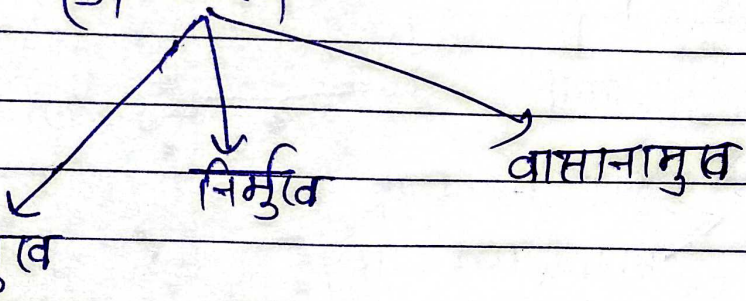

सम्मुख

निर्मुख

वासानामुख

जारण का लाभ

मात्रा	भामुप्रकाश	रसतरंगिणी
समभाग	100 गुना शक्ति	सामान्यरोगहर
द्विगुण	वृष्यनाशक	महारोगहर (कुष्ठादि
त्रिगुण	जड़तानाशक	वाजीकरण / पुंसत्व
चतुर्गुण	वलिपलितनाशक hair loss, wheling	मेधा स्मृति
पंचगुण	क्षयनाशक	सेताप, गंधनाश
षड्गुण	सर्वरोगहर	अद्भुतकार्म क वाला (मृत्युनाशक)

trick →

* 100 वृष्य की जग वलिपलित क्षय से सर्वरोग होते हैं।
* वापु मेधा स्मृति संग अद्भुत लगते हैं।

पारद का विशेष शोधन

PAGE NO.:
DATE:

दोषों के निवारण हेतु 18 संस्कार के अलावा जो ~~हमें~~ विधि पारद शोधन द्वारा की जाती है → विशेष शोधन (कांजी ← मर्दन → स्वेदन + घृतकुमारी) 3 days

① नागदोष निवारणार्थ – हरि का मूह ईटा) क्वन
Hg + 1/16 हरिद्रा चूर्ण + गंधक + शीशक चूर्ण + आकडदूध)

② वङ्ग दोष → (इन्द्र के अंकल हरि) इन्द्रामण + अंकोल + हरिद्रा चूर्ण

③ अग्नि दोष → चित्रक (1/16) → 3 days

④ मल दोष → अमलतास (1/16)

⑤ चापल्य दोष → कृष्णधत्तूर बीज

⑥ विष दोष → त्रिफला चूर्ण

⑦ गिरि दोष → त्रिकटु

⑧ मंदाग्नि दोष → गोक्षुर

मूर्च्छना

PAGE NO.:
DATE:

Ref. - • RT
• RS
• RHT
• AP

परिभाषा → ~~a/to (RHT)~~

- अथाऽधिचरित व्याधिघातकत्वं मूर्च्छना (AP)
- मूर्च्छितं व्याधिनाशनम् (सत्कार)
- मूर्च्छितो व्याधिघातकः (संसार संग्रह)

⇒ ~~मूर्च्छना शब्द~~ -

~~मूर्च्छना~~

~~मुर्छा~~

murchhang is the most imp process of mercury in which Hg convert into such a compound which having disease distroing properties and this form ~~to~~ can be used internaly without harmful iffect.

in murching Hg will not get it original form
- In this process Hg with or with out Sulphur convert such as compound which can be use internly for curing the disease.

⇒ 100% imp

① मूर्च्छना भेद

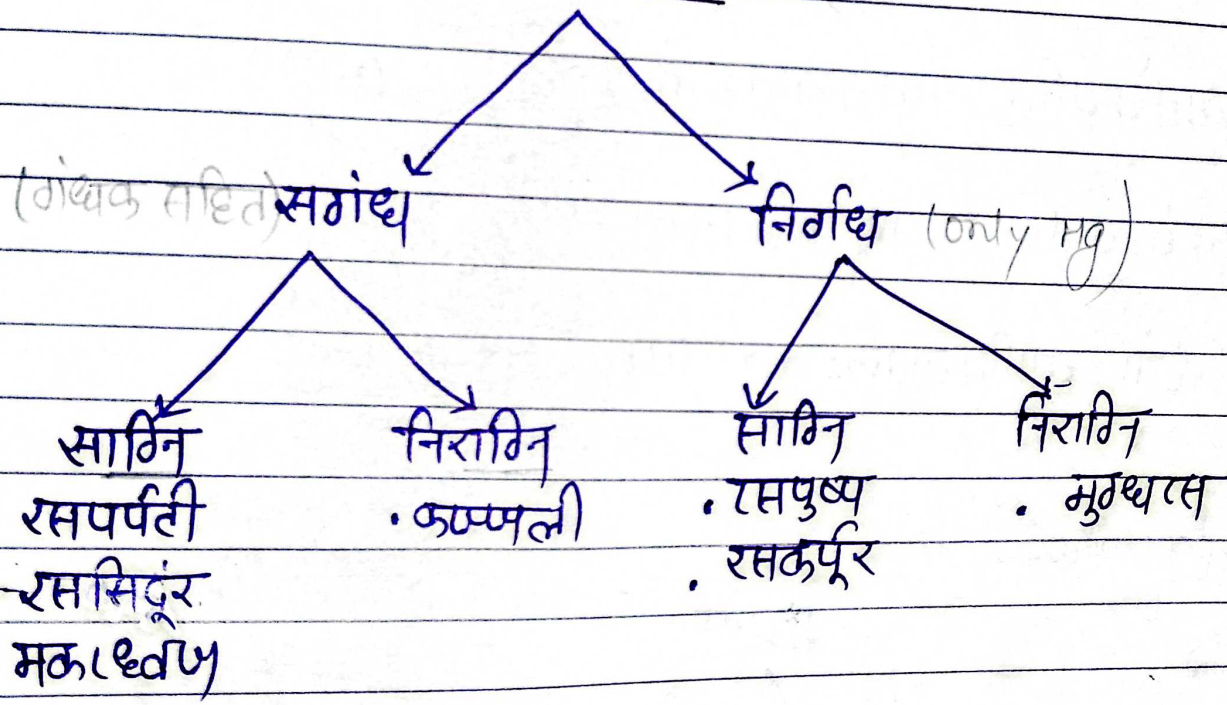

② मूर्च्छना
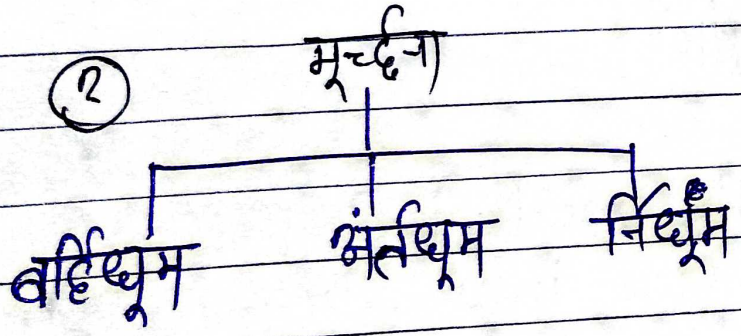
PAGE NO.:
DATE:

③ मूर्च्छित रस औषधि

- खरलीय रसायन
  - आरोग्यवर्धनी
  - त्रिभुवन कीर्ति रस
  - मुक्ताशुक्ति
  - रसमाणिक्य *
- पर्पटी कल्पना
  - (i) ताम्र
  - (ii) स्वर्ण
  - (iii) पंचामृत
- कूपीपक्व रसायन
  - (i) रससिंदूर
  - (ii) तालीसिंदूर
  - (iii) माणिक्य रस *
  - (iv) मकरध्वज
- पोटली रसायन
  - हेमगर्भ पोटली
  - हंसगर्भ पोटली

⇒ difference b/w मूर्च्छन & मूर्च्छना

• it is the type of संस्कार	special process by which Hg gain नाशि-गाहक properties
• It can't use internaly	It can use internaly
• used for removing impureities from Naag and वङ्ग	used for cure the disease.
• there are no types	many types, like – साग्नि, निरग्नि, संमर्द, बिंदु
• no speacial product	Speacial product are octane like, कज्जली, पर्पटी etc.

⇒ Diff. b/w जारण and मूर्च्छना

• use of agni compulsory	use of agni may be or may not.
* Hg remain's in its original form.	can't return Hg in it's original form.
• used for रसायन purpus	for disease purpus
• for – देहवाद and लोहवाद	used for only देहवाद
• physical property can't change	Physical property change
• it is a type of sanskar.	it is a speacal process
• it can't used direact theraputi – caly	it can use direactly
• ex. – नागजारण with पीपल चूर्ण, वङ्ग जारण by अपामार्ग चूर्ण	ex. रससिंदूर, रसपुष्प, रसपर्पटी

पर्पटी कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

1) व्युत्पत्ति - पर्पट शब्द से

(2) इतिहास - • 1st time नागार्जुन (रसेन्द्र मंगल)
• Detailed - चक्रपाणिदत्त - चक्रदत्त
• 13th Century - रस रत्न समुच्चय
• 16th Cent. - भावप्रकाश
• 19th Cent. - BR
• 20th Cent. - RT (रस तरंगिणी)

Term related to पर्पटी - पर्पट
पर्पटी
पर्पटिका ↓ लघु

(3) Defination -
द्रुतकल्पनिका मोचापत्रे चिपटीकृत्य च।
सं पोट पर्पटी सैव बालाद्यखिलरोगजुत॥

4) types of पर्पटी -

सगंध
Hg + S + other

ex.
रस, स्वर्ण पर्पटी etc.

निर्गंधि
SX (गंधक is absent)

ex.
श्वेत / क्षार पर्पटी

Notepoint → योग रत्नाकर + 6 पर्पटी निर्माण में ~~कदली पत्र के~~ स्थान पर अर्क पत्र की use किया है।

PAGE NO.:
DATE:

Material required - गोमय, खल्व, ~~कदली~~ पत्र, उष्णोदक
अर्क

→ Procedure → take purified Hg + Pure S
↓ trituration
make kajjali
↓ Δ
melted kajjali placed in kadli patra already placed in gomaya
↓
then this melted kajjali convert with another kadli patra & process
↓
make it papad like
↓
parpati prepared

→ मात्रा - सामान्य मात्रा 1-2 रती (125 - 250mg)
& rest → श्वेत पर्पटी - 5-10 रती
बोल पर्पटी - 3-6 रती
पर्पटी कल्प - 10 रती → 1 ½
↳ 40 days / 36 / 60 / 90 days

PAGE NO.:
DATE:

* पर्पटी में अपथ्य - अन्न, फल,
* पथ्य - milk, तक्र, मधु, लवण, घृत, भृष्ट जीरक
* अनुपान - तक्र / दूध

3) time व पर्पटी पाक

पाक	पाक कालीन वर्ण	पाक पश्चात्	प्रयोग
मृदु	मयूरचन्द्रिका	सम्यक रूप से न टूटे	चिकित्सा युक्त
मध्यम	तैलाभ	सम्यक् रूप से टूटने लगे	मुखवास
खर	रक्तवर्ण	रुक्ष, खर, लोहित	भंगुर

पर्पटी	Ref.	Ingredients (शुद्ध अवस्था मे)	मात्रा	प्रयोग
(1) रसपर्पटी (only Rasparpati in Syllabus theory)	भैषज्य रत्नावली	पारद : गंधक (1 : 1)	1-2 रत्ती	ग्रहणी, अतिसार पाण्डुरोग, कामला
(2) लौहपर्पटी	B.R	पारद, गंधक, कलौह (समभाग)	-n-	ग्रहणी, अतिसार, सूतिका ज्वर
(3) स्वर्णपर्पटी	B.R.	पारद (1), गंधक (1) स्वर्णपत्र (1/4)*	-n-	*राजयक्ष्मा, वृष्य अष्टविधशूल
(4) ताम्र पर्पटी दुष्टांत पर्पटी (लेखन+दुष्ट)	योग रत्नाकर RRS	पारद, गंधक, ताम्र, वत्सनाभ (1:1:1:1/3)*	-n-	ग्रहणी, अतिसार, श्वास *कास - RR *कुष्ठ - RRS *RR ने कदली पत्र के स्थान पर अर्कपत्र)
(5) विजय पर्पटी	BR. RSS रस सार संग्रह	*गंधक, पारद, रौप्यभस्म स्वर्ण भस्म, वंगभस्म मुक्ता भस्म (GPRS V भस्म) (4:2:1:1/2:1/4:1/4)	1-2 रत्ती	ग्रहणी, अतिसार, प्रमेह 18 प्रकार के कुष्ठ, 6 अर्श, क्षय होने वाले राजयक्ष्मा, वृष्य उत्तम रसायन
(6) पंचामृत पर्पटी	BR	गंधक, पारद, कांतलौह वृष्राभक, ताम्र *(8:4:2:1:1/2)	*2-3 रत्ती	ग्रहणी, अतिसार पाण्डु, कामला, नेत्ररोग

(7) गगन पर्पटी	सिद्धयोग संग्रह	P : G : अभ्रक (1 : 2 : 1)	1-2 रत्ती	—
(8) * बोल पर्पटी	YR	P : G : बोलचूर्ण (1 : 1 : 2) (हीराबोल)	3-6 रत्ती	* रक्तपित्त, (Bleeding disorders) (स्तम्भक)
(9) श्वेतपर्पटी / क्षारपर्पटी / निम्बिघ्नि	सिद्धयोग संग्रह	सूर्यक्षार 16 स्फटिका 2 नवसाद 1	5-10 रत्ती	मूत्रकृच्छ / अश्मरी मूत्रल रोगो मे
(10) सप्तामृत पर्पटी	BR	पंचामृत पर्पटी + नाग + वङ्ग (समभाग)	1-2 रत्ती	ग्रहणी अतिसार

Note →

Que · रक्तपित्त मे use होने वाली पर्पटी ?

Que → Psycosomatic diseases मे रसपर्पटी use (stress की ड़)

सरल → लौह, Ingredients
↙ ↘ रस समभाग
सप्तामृत

Que क्षय होने वाले राजयक्ष्मा मे use ?

Que स्वर्ण पर्पटी मे स्वर्ण - ? (1/4)

पर्पटी नाम	रोगाधिकार
अष्टामृत पर्पटी	शूल [detailed study in साधन विधान]
गगन पर्पटी	पाण्डु, ग्रहणी
मणि पर्पटी	नासारोग
सर्वेश्वर पर्पटी	विद्रधि
मुक्ता पर्पटी	अम्लपित्त
रत्न पर्पटी	राजयक्ष्मा
मल्लपर्पटी	
रत्न पर्पटी	प्रापदा (राजयक्ष्मा)

Importance of पर्पटी कल्पना →

- Parpati is type of pot bandh of Hg.
- Hg become free from all impurities.
- in kajjali free Hg converted into Hgs compound (in parpati which is less toxic)

- In parpati cow doung containing pitta of cow which effect on mandagni.
- In parpati agni sanskar induce the property of दीपन पाचन & ग्राही।
- Banana leaves having कषाय रस & starch which causes ~~स्तम्भन~~ useful in grahani & other disease
- क्षार पर्पटी & सुधा पर्पटी को बनाने के लिए कदली पत्र की आवश्यकता नही पड़ती।
- पर्पटी के खर पाक से कज्जली रस सिंदूर में परिवर्तित हो जाता है।

Intermediate product
(अपक्व - can't be used in treatment)

मुग्धरस (grey powder)

PAGE NO.:
DATE:

• निर्गन्धि, निराग्नि

Ref. – R.T.

Ingredient – पारद : धटिका (chalk powder)
1 : 2

Prodedure – Take Hg + धटिका
1 : 2
↓
well mix
↓
Examine the निश्चंद्रिका effect

मात्रा – for child – 1/8 – 1/4th रत्ती
for adult – 1/2 – 2 रत्ती

use – हरित वर्ण से ग्रसित अतिसार पीड़ित बच्चो के लिए

रस बंध

PAGE NO.:
DATE:

Ref. – RRS

परिभाषा – " मैत्र-मैत्र हि चाञ्चल्यं पुर्त्तहित्वं च नश्यति।
रसराजस्य सम्प्रोक्तो बन्धनार्थो हि वादिभिः॥ "

संख्या – according to RRS – 25

दंष्ट्रारोटौ त्वाऽऽभासः क्रिमाहीनश्चपिच्छिका
क्षारः खोटश्च पोटश्च कल्कबन्धश्च कच्छपः।
सजीवश्चैव निर्जीवो निर्बीजश्च सबीजकः
स्रंवल्लुतिबन्धौ च बालकश्च कुमारकः।
तरुणश्च च तथा वृद्धो मूर्छितश्च तमास्पदः
जलबन्धोऽग्निबन्धश्च सुसंस्कृतमिश्रः
महाबन्धाभिधश्चेति पंचविंशतिरीरितः।

Defi → The term 'bandh' denote a process in which Hg converted into solid form from its liq. form.

⇒ हानिकारक प्रभाव करने वाले बंध –
(1) दंष्ट्र – मृत्यु
(2) आभास – मृत्यु
(3) क्रिमाहीन → useful

PAGE NO.:
DATE:

⇒ सर्वरोगहरबंध-
① खोट
② पोट
③ कल्क
④ कज्जली
⑤ निर्बीज
⑥ निर्जीव

⇒ समान कार्म हेतु -
① मूर्ति
② जल
③ सुसंस्कृत
④ महाबन्ध
⑤ अग्नि

⇒ असाध्य रोग हेतु - द्रुति
⇒ दीपन पाचन हेतु - पिष्टी
⇒ देह को लौह सदृश बनाने के लिए - श्रृंखला
⇒ क्षेत्रीकरण - आरोट बंध
(useing in panchkarma for purification of body before useing bhasam.)

⇒ total बंध-

(1) ६०	(9) कल्क	(17) बालक	(25) महाबंध
(2) आरोट	(10) कज्जली	(18) कुमार	
(3) आभास	(11) सजीव	(19) तरुण	
(4) कृमिहीन	(12) निर्जीव	(20) वृद्ध	
(5) पिष्टिका	(13) निर्बीज	(21) मूर्ति	
(6) क्षार	(14) सबीज	(22) अग्नि	
(7) खोट	(15) श्रृंखला	(23) जल	
(8) पोट	(16) द्रुति	(24) सुसंस्कृत	

—: शोषादि वटी :—

PAGE NO.:
DATE:

Ref → भा० प्र०

ingridients →

शोषाम्लवेतस चव्यंतालीषं चित्रक तथा
धीरके द्वि च प्रत्येक कर्ष भागिक
त्रिसुगंधं त्रिशाणं स्यात् गुण: स्यात्कर्ष विंशती

शुण्ठी — 1
मरिच — 1
पिप्पली — 1
चव्य — 1
चित्रक — 1
इमलीपत्र स्वरस — 1
धीरक — 1
त्रिजात — 1/4 each
गुड — ~~40~~ 20 गुना (main)

उपयोग → ~~भा~~ श्वास, कास, प्रतिश्याय, पाण्डु, कामला

dose → 6gm.

शंखवटी

Ref. → B.R.

Ingridents — P — 1, G — 1, वत्सनाभ — 2, शुण्ठी — 3, मरिच — 4
सर्जिक्षार — 3, शंखभस्म — 4, पिप्पली — 3
पंचलवण — प्रत्येक 3-3 भाग

भावना — निम्बुस्वरस

dose — 3-3 Ratti

use — दीपन-पाचन, अपच, अग्निमांद्य, अम्लपित्त

आरोग्यवर्धनी वटी ★ 100%

PAGE NO.:
DATE:

origin → RRS
कुष्ठप्रकरण में वर्णित ★

Ingrediants —

रसगंधलौहाभ्रक शुल्वभस्म समांशकम्
त्रिफला द्विगुणा प्रोक्ता त्रिगुणं च शिलाजतु
चतुर्गुणं पुरं, शुद्धं चित्रकमूलं तत्समम्।
तिक्ता सर्वसमा क्षेमा, सर्वं सम्पूर्णमत्नतः।
निम्बवृक्षदलाम्भोभि मर्दयेत् दिदिनावधि।
ततश्च वटिका कार्या राजकोलफलोपमा।
बहुनात्र किमुक्तेन सर्वरोगेषु शस्यते।
आरोग्यवर्धनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता।
सर्वरोग प्रशमनी श्रीनागार्जुन भोगिता।

⇒ शुद्ध पारद, लौहभस्म, अभ्रक, शुल्व (ताम्र भस्म) समभाग

त्रिफला + शिलाजतु + पुरं (गुग्गुलु) + चित्रमूलं
2 गुना त्रिगुना 4 गुना

+

तिक्ता (कुटज) (समभाग) (main)

↓ चूर्ण

निम्बवृक्ष की दाल से भावना

↓

tablet form in राजकोल समाण (बड़ी वटी)

—: चन्द्रप्रभावटी :—

PAGE NO.:
DATE:

Ref → BR in प्रमेह प्रकरण

Indridents
- गुग्गुल – 8
- शिलाजतु – 8] – main
- सिता – 4
- लौहचूर्ण / हतचूर्ण – 2 (भस्म)
- चतुर्जाति, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, कर्चूर, वचा, चिरायता, देवदारु, अतीष, पिप्पलीमूल, चित्रकमूल, वंशलोचन] – all equal part
- त्रिफला, त्रिकटु, क्षारद्वय, लवणत्रय, स्वर्णमक्षिक, धान्यक, विडंग, चव्य, गजपिप्पली] 1/4

NOP → same

मात्रा – 3-4 Ratti

अनुपान – दुग्ध (1 कर्ष – 1/4 टंक)

प्रयोग – अश्मरी, प्रमेह, मूत्राघात

—संजीवनी वटी—

गुञ्जाभा गुटिका कार्या
दधिकाङ्कोल्वणे रसैः
एकामपीप्पलीमूलैः द्वे विश्वाः
त्रीन्प्रभूत सर्पदष्टे तु चतस्रो
सन्निपातिके।

Ref. → शार्ङ्गधर संहिता मध्यखण्ड

सामग्री—

विडंगं नागरं कृष्णा पथ्यामलविभीतकम्
वचा गुडुची भल्लातं सविषं चात्र मीलिते
एतानि समभागानि गोमूत्रेणैव पेषयेत्।

विडंग — 1
शुण्ठी — 1
पिप्पली — 1
हरीतकी — 1
विभीतकी — 1 } त्रिफला
आमलकी — 1
वचा — 1
गुडुची — 1
शुद्ध भल्लातक — 1 } विष
शुद्ध वत्सनाभ — 1

भावना — गोमूत्र

मात्रा — गुञ्जा प्रमाण / 1 रत्ती / 125 mg

प्रयोग — गुल्म / अजीर्ण — 1 रत्ती
विसूचिका — 2 रत्ती
सर्पदंश — 3 रत्ती
सन्निपातज्वर — 4 रत्ती

अनुपान — आर्द्रक स्वरस

→ method of Preparation —

Take all ingridients in equal amoun
↓
mixed well
↓ भावना — गोमूत्र
+ trituration (मर्दन)
↓
mak pills — 1–1 रत्ती

० लवंगादि वटी ०

PAGE NO.:
DATE:

Ref. - वैद्यकजीवन

Indradients —

तुल्यालवंगमरिचाक्षफलत्वचः स्युः
सर्वे समो निमर्दित खदिरस्य सारः
वल्कूलः वृक्षप्य कषाय युतश्च चूर्ण
कासन्निहन्ति गुटिका वटिकाऽस्यकान्ते /

trick -
(लड़की ने बहुत मारा बाबा का खादि (वाकर)

(1) लवंग
(2) विभीतक फलत्वक - 1
(3) मरिच चूर्ण - 1
(4) वल्कूल छाल - भावना
(5) खदिर ~~काष्ठ~~ सार - 3 भाग - main

Process → Same

मात्रा - 3-4 रत्ती

प्रयोग - कास / मुखपाक

• रसोनादिवटी •

PAGE NO.:
DATE:

Ref. - वैद्यक जीवन

घटक - "लशुनजीरकांधकसैंधवं त्रिकटु रामठ्यूर्णमिदं समम् तपदि निम्बुरसेन विसूचिका हरति भो रतिभागविचक्षणे।"

~~trick~~ → (यानी हमले जासूस त्रिकुट की गलियो मे नचाकर)

(1) रसोन - 1
(2) हिंगु - 1
(3) जीरक - 1
(4) शुण्ठी - 1 — त्रिकटु
(5) मरिच - 1
(6) पिप्पली - 1
(7) मांधक - 1
(8) सैंधव - 1
(9) निम्बुस्वरस → q/to

mop → same

भावना - निम्बुस्वरस

मात्रा → 2-4 रत्ती

प्रयोग → विसूचिका / अपचीर्ण / अध्यमान / उदरशूल

एलादि वटी

PAGE NO.:
DATE:

सन्दर्भ → BR - रक्तपित्ते

एलापत्रत्वचोऽक्षिाः पिप्पल्यर्धपलं तथा।
सितामधुकखर्जूर मद्वीकाश्च पलोन्मिताः
सञ्चूर्ण्य मधुना मुक्ता गुटिकाः कारयोद्विषड्।
अक्षमात्रां ततश्चैकां भक्षमेच्च दिने-2
कासं श्वासं ज्वरं हिक्कां छर्दि मूर्च्छां मदं भ्रमम्
रक्तनिष्ठीवनं तृष्णां पार्श्वशूलमरोचकम्।
शोषप्लीहामवाताश्च स्वरभेदं क्षतक्षयम्
गुटिका तर्पणी तृष्णा रक्तपित्तं विनाशयेत

Contant →

छोटी इलाइची	–	1
तेजपत्र	–	1
दालचीनी	–	1
बड़ी पिप्पली	–	4
चीनी	–	8
मुलेठी	–	8
खजूर पिण्ड	–	8
मुनक्का	–	8
मधु	–	मधातरपट

मात्रा – 1-1 गोली / 2 times

महारस, उपरस, साधारण रस

PAGE NO.:
DATE:

महारस - अभ्रकवैक्रान्त
वैक्रान्ताभ्रकमाक्षिक विमलाद्रिर्जसस्यकम्
चपलो रसकश्च ज्ञात्वार्ष्टौ महतेदृशान्।
(RRS 2/1)

उपरस -
गंधकाश्म गैरिकासीसकाऽक्षी तालशिलाञ्जनम।
कंकुष्ठं च इति उपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि।
(RRS -3)

साधारण रस -
कपिलोश्चापरो गौरीपाषणो नवसारकः
कपर्दो वह्निप्राश्च गिरिसिंदूर हिंगुलौ
मंदारशृङ्गमइति अष्टौ साधारण रसाः स्मृतः
रससिद्धिकराः प्रोक्ताः
→ नागार्जुन पुरस्सरैः॥ (RRS -3)

रत्न -
मुक्ताफलविद्रुमणि तर्क्ष्म च पुष्पं भिदुरत्यनीलम
गोमेदक विदूरकश्च क्रमेण रत्नानि नवमहाणाम
नीलम
(RRS-4)

उपरत्न -
वैक्रान्त सूर्यकान्तश्च चन्द्रकान्तो नृपोपलः
पेरोजकञ्च स्फटिकं क्षुद्ररत्नगणो ह्यमम् (RT -23)

महारस

उपरत्न-उपधातु

महारस	English name & formula	धर्मभि	भेद	शोधन
अभ्रक	mica *कृष्णाभ्रक Biotite	*गौरीतेज / अनंत / वज्र* / वज्रक / तोम / अभ्र / गिरिज / ब्रह्मपुत्र* (अंतरिक्ष से संबंधित)	पीनाक, नाग, मण्डूक वज्र प्रत्येक 4-4; श्वेत, कृष्ण, रक्त, पीत कृष्णवज्राभ्रक - श्रेष्ठ	त्रिफला कोशी गोमूत्र, गोदुग्ध — 7 बार निर्वाप
वैक्रान्त	*Tourmaline / *Flowerpay	कुवज्रक / जीर्णवज्रक, चूर्णवज्रक, अक्षज लाहीरा / शोभामणि (like विकृत हीरा)	(RRS) (8) श्वेत, कृष्ण, रक्त, पीत श्याम, नीला, कर्बुदार, पारावत — अभ्र	कुलत्थ / कोदो / कदली स्वरस - दोलायंत्र or अश्वमूत्र में 21 बार बुझाना
माक्षिक	• स्वर्णमाक्षिक — Cu_2S, Fe_2S_3 (chalcopyrite) • रजत माक्षिक — Fe_2S_3	• धातुमाक्षिक / द्विनमाक्षिक / ताप्य / तापीज / • रौप्यमाक्षिक / तार / तारज / विमल सोनामाखी	(3) स्वर्ण- पीतवर्णी श्रेष्ठ रजत - शुक्ल, कांस्य - रक्त (3) ~~हेम, तार, कांस्य~~	भृंगराज / एरण्ड तैल / त्रिफला / कदली → दोलायं or त्रिफला क्वाथ में — 7 बार
विमल	Iron pyrite Fe_2S_3	विमल	(3) हेम, तार, कांस्य	वासा स्वरस / मेषशृंगी स्वरस — स्वेदन
शिलाजतु	गोमूत्रगंधी [Black Bitumin] कर्पूरगंधी - KNO_3	आद्रिज / क्षितिज / शैलेय / शैलधातु / शिलानिर्यास / अश्मज / गिरिज	चरक → 4 (स्वर्णाद्रिज, रजताद्रिज, ताम्राद्रिज, लोहाद्रिज) सुश्रुत - 6 (4 + नाग, वंग) रसग्रंथ - गोमूत्रगंधी, कर्पूरगंधी	भृंगराज स्वरस / गोदुग्ध एलास्वास / त्रिफला क्वाथ — प्रक्षालन
सस्यक	Blue vitriol ($CuSO_4 \cdot 7H_2O$)	मसृण / तुत्थ / तुत्थक / अम्लासंग or अपमार्गकाक्षी / ताम्रगर्भ / शिखिग्रीव*	रक्त, (श्याम) कपिला	रक्तवर्ग / स्नेहवर्ग → 7 भावना
चपल	Bismuth (Bi)	चपल	(4) श्वेत, गौर, अरुण, कृष्ण	जम्बीरी / वन्ध्याकर्कोटी — 7 भावना नीबू
सत्व	Calamine / $ZnCO_3$	रवर्पर / ताम्रतेजक / पंचरोगारि* रसोद्भव	रसार्णव - मृत्तिकाका, गुडाभ, पाषाणभ RRS - दर्दुर (सत्वपातन) कारवल्लक (कल्क) भावयेत्यार्द्र	- बीजपुरस / नक्रमूत्र / अश्वमूत्र - 7 बार बुझाना

मारण	मात्रा	योग
(1) ताम्रभस्मक + कांचमर्द स्वरस - चक्रीकृत शराव सम्पुट - 10 गजपुट · इष्टिका वर्णाभ भस्म	1-2 रत्ती	• आरोग्यवर्धनी वटी • चन्द्रप्रभा वटी • पञ्चामृत पर्पटी • गगन पर्पटी • लक्ष्मीविलास रस (LV)
(2) शुद्ध वैक्रान्त + गंधक → निम्बु स्वरस सम्पुट - गजपुट → गुलाबी भस्म	1/24 - 1/11 रत्ती	• विषमज्वरतक रस • वसंत कुसुमाकर रस * स्वर्णवसंत मालिनी रस
(3) शुद्ध माक्षिक " —	1/2 - 2 Rati	• चन्द्रप्रभावटी · माक्षिक भस्म
(4) विमल —	1/2 - 2 Ratti	• मदनमंजीवन रस
(5) शिलाजतु + मनःशिला + हरताल + गंधक → निम्बु स्वरस, सम्पुट → चक्रीकरण → भस्म	5 → 2, 1 तोला प्रथम, मध्यम, अन्त 7, 3, 1 सप्ताह	• चंद्रप्रभावटी • आरोग्यवर्धनी • शिलाजत्वादी वटी ** शिवागुटिका (Diabetis)
(6) समुद्र + गंधक + टंकण → लघुपुट भावना → पुक्कट पुट	1/8 - 1/4 Ratti	• ज्वात्मादि तैल घृत • महामृत्युंजय रस
(7) चपल + रससिंदूर → निर्गुण्डी स्वरस → वालुकायंत्र	1/4 - 1 Ratti	—
(8) रसक + पारद → वालुकायंत्र → रसक भस्म	1/2 - 1 Ratti	• कस्तूरी भैरव रस • वंसमालिनी रस • LV रस

उपरस

उपरस	Symbol formula	पर्यायः	भेद	शोधन	मारण	मात्रा	योग
गंधक	(S)	गौरीपुष्प, नवनीत, ललितक, वृलिवस, अतिगंधा, पमारि, कुष्ठारि, पूतिगंध, दूरगंध	आवलासार, खड्डिकासार → 2 SRKP → (4)	→ गोघृत का भर्जन, गौदुग्ध मे विलयन → भृंगराज / आण्ड / अदरक स्वरस भावना → (1)	× (कज्जली शोधन हेतु)	1-8 R. गंधक रसायन 1 तोला	कज्जली, रसपर्पटी, रससिंदूर, समीरपन्नग रस, आरोग्यवर्धनी
गैरिक	ochre Fe_2O_3 (iron oxide)	गिरिज, सत्यधातु लौहधातु	स्वर्ण, पाषाण (श्रेष्ठ)	• गोघृत मे भर्जन, गौदुग्ध मे विलयन / भावना	×	2-4 R. (Lucorrhoea)	(सहपिप्पली) कामदुधारस, पुष्पा-युक चूर्ण, लघुसूत शेखर रस
कासीस	green vitriol $FeSO_4 \cdot 5H_2O$	धातुकासीस, खग खेचर	RRS → बालुका, पुष्प - (2) (आन-पक-प) - SRKP - (4)	भृंगराज / नीबु / माणिक्य पित्त / स्त्री आर्तव → भावना (1)	कासीस + कॉजी → 7 भावना ↓ रक्तचन्दनवर्ण भस्म	1-2 R.	(irregular menses) रजःप्रवर्तिनी वटी, कासीसादि तेल
फाडःक्षी	$K_2SO_4 Al_2(SO_4)_3 \cdot 24H_2O$	Alum, फिटकरी, रंगदा सौराष्ट्रमृत्तिका, शुभ्रा तुवरी, रंगदृढा, दृढरगा	फटकी, फुल्लिका (RRS)	→ निर्फलीकरण → कांजी मे उदिन तक डुबाकर रखने पर	सम्पुट → लघुपुट	2-4 R.	श्वेतपर्पटी, शुभ्रा-भस्म, फलादिमन्थ
हरताल	orpiment As_2S_3 (yellow arsenic)	भाल, पत्र, वेगार, विडालक, नटमंडल, नटभूषण वंशपत्रक	पत्रताल - श्रेष्ठ पिण्डताल (स्त्रीपुष्प हर)	वृक्षाम्ल (कड्डू) स्वरस / कांसमर्द स्वरस / चूर्णोदक / कांजी / त्रिफला -क्वाथ / तिलतैल / शालमल्ली स्वरस स्वेदन in दोलायन्त्र ← (समन)	हरताल + पलाश मूल क्वाथ → 3 भावना ↓ कपोतपुट मात्रा - 1/4 - 1/2 R.	1/4 - 1/2 R.	समीरपन्नगरस, रसमाणिक्य, महा-मृत्युंजयरस, तालसिंदूर, वातगुजांकुश रस
मनःशिला	Realgar As_2S_2 (Red arsenic)	कुनटी, कुलटी, नागमाता नागजिह्विका, रसगंधक मनोगुप्ता, शिला	श्यामांगी (R) - श्रेष्ठ कणवीरा (Y) - श्रेष्ठतर रक्तालया (भूतिका) श्रेष्ठतम (RRS)	→ भृंगरस या स्वरस / अदरक स्वरस → 7 भावना • जयन्ती पत्र स्वरस / चूर्णोदक / भृंगराज स्वेदन in दोलायन्त्र	× मात्रा 1/32 - 1/16 R		समीरपन्नगरस, श्वासकुठाररस, चन्द्रोदय वटी, मरिचादि तेल (NZH-2011)
अंजन	Antimony sulphide Sb_2S_3	मेचक, लोचक - (5 type) (सौवीरांजन - 6, रोताञ्जन - 5, नीलांजन, पुष्पांजन, सौभ्र)		→ Comman → 5 मे भृंगराज स्वरस भावना	×		पुष्पानुग चूर्ण, रसाञ्जन, पत्रांगासव, पीयूषवल्ली तैल (2.6)
केवुक	Garcinia morella	तीक्ष्णदुग्धिका स्वर्णक्षीरिणी-समा		शुण्ठीक्वाथ → 3 भावना	× 4-6 गुञ्जा रेचन - 3-6 माशा or 1 मव		धन्वन्तरी घृत & धन्वन्तरीय मृतसंजीवनी

साधारण रस	English Name	पर्याय	PAGE NO.: DATE: शोधन	मारण	भेद	मात्रा
कम्पिल्लक	mallotus Phillipensis	रक्तचूर्णक / खतंग / रेचन / रोचन / कर्क।	×	×		
गौरीपाषाण	white As As_2O_3	सेलिमा / सोमल / फेनाम / श्वेतपाषाण / हतचूर्णक	गोदुग्ध / कारवेल्लक स्वरस in दोलायंत्र	अर्कक्षीर भावना RRS गजपुट	★स्फटिकाभ (श्वेत) हरिताभ, श्यावाभ RT ⇒ कृत्रिम, खनिज	
नवसादर	Monium salt NH_4Cl	ईष्टिकालवण / विजलवण चुल्लिका लवण	×	×	×	
कर्पर	Cowly / marine shell	★चर / चरचर / वराह / वराहिका / बालवीजक	निम्बुस्वरस / कांजी दोलायंत्र	गजपुट	★ RRS वराह वराहिका | RRS सार्द्धनिष्क निष्काभार पादवनिष्कभार	
बहिष्पति	ambar gris	अम्बर / जरायु / अग्नि निर्यास	×	×	×	
~~★~~ गिरिसिंदूर	HgO (mercury oxide)	~~★~~ रक्तरेणु	×	×	×	
हिंगुल	Hgs (mercury sulphide)	★चूर्णपारद / चीमरि / दरद / लोहदल	निम्बु / भार्गव / लघुच स्वरस – 7 भावना	×	~~रे~~ कृत्रिम खनि | RT चीमरि शुक्लतुण्ड हंसपाद	
मदारश्रृंग	Litharge (PbO)	वोदारश्रृंग	×	×	पीत (सदल) पाण्डुर (निर्दल)	

रत्न प्रकरण | Precious stone

PAGE NO.:
DATE:

→ Ref. RRS (4) / AP (5)

→ परिभाषा -
धनाधिनोऽपनाः सर्वेरमन्तेऽस्मिन्नतीवमन
अतो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः

→ पर्याय - रत्न / मणि / वरपाषाण (श्रेष्ठत्वात्)

→ मणि - देहस्थधारकाःगुणा जरादयाधिविनाशकाः

→ मणि संख्या - (8) सूर्यकांत, चंद्रकान्त, वैडूर्यकांत, राजावर्त मणि, मौक्तिक, हीरा, पन्ना

→ रत्नसंख्या - सभी ने (9), सोपनिषद (7)
प्रवाल पन्ना, पुखराज × (वैडूर्यकांत ✓)

→ नवरत्न -
माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यश्च पुष्पं भिदुरश्च
नीलम् गोमेदकश्चाप्यथ विद्रुकश्च क्रमेण
रत्नानि नवग्रहाणाम् ।

→ रत्नो की जातियाँ →
प्राणिज - प्रवाल, मुक्ता
वानस्पतिक - तृणकांत, संगेमूसा
खनिज - बाकी सभी

PAGE NO.:
DATE:

⇒ रत्नों के गुण- स्वच्छ, चमकदार, अष्टफलक, षटकोण, लघु

⇒ रत्नदोष - ① तमस - अपारदर्शी / काला
② त्रास - आवृतरंग न होना
③ बिन्दु - कोई बिन्दु / कण होना
④ रेखा - परस्पर कटी रेखा युक्त
⑤ जलगर्भत - रत्न के मध्य में बुदबुदता सा चमकता

⇒ रत्न पर कालप्रभाव ⇒ प्रवाल मुक्ता (समय के अनुसार बढ़े होते हैं)
(अन्य पर कोई प्रभाव नहीं)

⇒ सामान्यतः सभी रत्न
रस- मधुर कषाय, शीतवीर्य

⇒ * गोमेद → अम्लरस, उष्णवीर्य

Imp points

* हीरे के ६ दोष- बिन्दु / रेखा / मल / मल / काकपद
चमक
औंस के आकार के चिन्ह

* षडरसमुक्त द्रव्य - कृष्णखण्डमाँस (काले हिरन का माँस) P.G (5) & पारद, वैक्रान्त, पृथ्वी, हीरक भस्म

PAGE NO.:
DATE:

⇒ माणिक्य का लाल रंग Cromium oxide के कारण होता है।

⇒ पन्ना या ताक्ष्य का हरा रंग Cromic oxide के कारण

⇒ कृत्रिम प्रवाल निर्माण विधि 'रसप्रकाशसुधाकर' में सिद्धा बताया

⇒ नीलम् एवं माणिक्य दोनों रासायनिक रूप से Al_2O_3 है।

⇒ मुक्ता में कुल 10 दोष पाये जाते है। (4 महादोष , 6 सामान्य दोष)

⇒ गोमेद में अणुधर्मिता पायी जाती है।

⇒ हीरा में Allotropism पायी जाती है।

⇒ रत्नों का सामान्य मारण गजपुट द्वारा किया जाता है।
except मुक्ता मारण → कुक्कुट द्वारा

⇒ गोमेद को Unani में अकीक / सेसुलेमानी संगेसुलेमानी

रत्न	English Name	ग्रहे संबद्ध	रत्नवर्ग	कार्टिय	आपेक्षिक घनत्व
माणिक्य	Ruby	सूर्य	लाल	9	4
मुक्ता	Pearl	चन्द्र	श्वेत	3.5	2.7
प्रवाल	Corel	मंगल	रक्त	3.5	2.7
मरकत/पन्ना	Emerald	बुध	हरित	7.5	2.7
पुखराज	Topaz	गुरु	पीत	8	3.6
वज्र/हीरा	Diamond	शुक्र	श्वेत	10	3.5
नीलम्	Sapphire नीलकांत	शनि	नील	9	4
गोमेद	zircon	राहू	धूम्र	7.5	4.5
वैदूर्य	Cat's eye	केतु	धूम्र	8.5	3.5

रत्नाभाव → उपरत्न - $\frac{1}{64}$
लघुत्व → हीन साधन

रत्न	शोधन (U.G = Emp)	मारण (U.G)	मात्रा	योग
माणिक्य	अम्लवर्ग द्रव्य स्वेदन in पोलायंत्र	हरताल मनःशिला लघुत्व स्वरस भावना (8) गजपुट	1/8-1/4 रत्ती	जवाहर मोहरा वटी माकृती, राज मृगांक रस (use in राजमृगांकरस)
मुक्ता	जयन्तीपत्र स्वरस	मुलाब्ज स्वरस भावना गजपुट/कुक्कुट	1/4-1	मुक्ता पंचामृत रस, त्रिलोक चिंतामणि रस
प्रवाल	क्षारवर्ग	कुमारी भावना गजपुट	1/2-1	प्रवालपंचामृत रस / कामदुधा रस *
पन्ना	गोदुग्ध	माणिक्य के समान	1/4-1	मणि पर्पटी
पुखराज (Topaz)	कुलत्थ/कांजी	—〃—	1/4-1	मणि पर्पटी
हीरा	तण्डुलीय/चौलाई	पारद गंधक मनःशिला + नीबू स्वरस (14) गजपुट	1/32 - 1/16 माणिक्य के समान	कर्दमसुदर्शन / हीरक भस्म
नीलम्	नीली स्वरस		1/8-1/2	नवरत्नराजमृगांकरस
गोमेद (शनि संबंधित)	नीबू स्वरस	माणिक्य के समान	1/4-1	— 〃 —
वैदूर्य	त्रिफला क्वाथ	—〃—	1/8-1	पिण्डांजन *

* use Comman in all.

* मूल्यवान रत्नों का मारण नहीं करना चाहिए। रत्नों की भस्म के लिए इस रत्न को ग्रहण करना चाहिए जो धातु के सयोग से कम मूल्य में उपलब्ध हो

रत्न → TT best comparison to उपरत्न (क्षेत्र → शोध प्रयास)

पर्याय	भेद (Shlok in Books)
रवि रत्न, रत्नराज्ञ, सौगन्धिक, कुरुविंद	① पद्मराग (लालकमल के पुष्प) ② नीलगन्धि (मेना के पु
मौती, मुक्ताफल, शशिलाल मौक्तिक, शुक्तिज	① प्राकृत ② कृत्रिम
मूँगा, विद्रुम, रक्तांग रक्तांकुर, भौमरत्न	① शाखा * ② मूल
ताक्ष्म, मरकत, बुधरत्न हरितमणि, गारुडमणि अश्म गर्भज	① हरित (Emp) ② नील ③ श्वेत (श्रेष्ठ)
पुष्पराग, वाचस्पति वल्लभ गुरुवल्लभ, पीताश्म	✗
भिदुर, अशनिवज्र, वज्रक भार्गविप्रिय, शुक्रप्रिय	लिङ्ग के base पर ① नर ② नारी ③ नपुंसक ⇒ ब्राह्मण ② क्षत्रिय ③ वैश्य (4) शूद्र
महानील, नीलरत्न, शनिरत्न तृणध्वाधि	① इन्द्रनील ② ब्रह्मनील best जाति → ① ② ③ ④
राहुरत्न, Pink स्फटिक zircon, Cinnamon stone Hessonite, azale केतुरत्न, लहसुनिया विडालाक्ष, मार्जारनेत्र	① ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र ✗

उपरत्न → संख्या → 7

① बृहत्संहिता तरंगणी - 4 (3) CCIM - (8)
(2) रसतरंगिनी - (6) (4) आयुप्रकाश - (5)

उपरत्न संख्या	English Name	पर्याय	शोधन	मारण	मात्रा	भोग
सूर्यकान्त	Sun Stone (Pinkish)	सूर्यमणि/ सूर्योपल/Oligo clase*	×	मनःशिला + गंधक → गजपुट	1/4 - 1 रत्ती	~~रक्तपित्त~~ मेध्य/रसायन
चन्द्रकांत	moonstone /(Bluish)	Feldspathite/ शशिकांत चन्द्रोपल/चन्द्रकांत	×	हिंगुल + मनःशिला → गजपुट	1/2 - 1 रत्ती	रक्तपित्त/दाहशमन*
राजावर्त	Lapis Lazuli* (Royal blue colour)	नृपावर्त/भावर्तमणि	① नीबू/ गोमूत्र/ सुक्षार ② ~~पिप्पलीपुष्प~~ स्वरस → in क्षार	गंधक → गजपुट	1/2 - 1 रत्ती	रामबाण रस*
वैक्रांत	Tourmaline /Horspare	जीर्णवज्रक/दुर्वज्रक क्षुद्र पुलिश/चूर्णवज्र	कांजी/कुलत्थ दोलायंत्र	गंधक → नीबू → गजपुट	1/24 - 1/11 रत्ती	वंसन्तसुकुमार रस
पैरोजक	Turquoise	पिरोजा/हरिमणि	Same as राजावर्त	Same as राजावर्त	1/2 - 1 रत्ती	*स्थावर/जांगम कृत्रिम विषद
स्फटिक	Pebal/Quartz Rock Crystal	स्वच्छमणि /शिवशिल	— " —	— " —	2-4 रत्ती	स्फटिक भस्म
तृणकांत	Amber	कहरुवा fossil resin	×	×	1-2 माशा	रक्तपित्त, रक्तार्श
सोमाश्म	Jade/Jodite	सोमेशशल /हरितमणि	अर्जुनक्वाथ ४ बार भावना	अर्जुनक्वाथ भावना 2 गजपुट	2-4 रत्ती	हृद, हृदौर्बल्य हृदसंपन

माणिक्य * मात्रा → 1/4 - 1 रत्ती

* स्फटिक → उपरत्न
स्फटिका → उपरत्न

अम्बर → ~~दंती~~
अम्बरगंधास

वैक्रान्त → उपरत्न
मेघनाद

सूर्यकांत, चन्द्रकांत तृणकांत का शोधन नहीं*

तृणकांत - मारण X

विष – उपविष

Ref.-

RRS - (5)

विष → कालकूट, ग्रंथुक, वत्सनाभ, सक्तुक, पित्त

उपविष → कणिहारी, नागनी / बुचला / कनेर / भांग / भल्लातक

(7) (RRS) → / अर्क / धतूरा

RT - (11) कलिहारी / कनेर / भांग (विजया) / भल्लातक / अर्कहीर
स्नूहीक्षीर / अहिफेन / जमपाल / सफेदमुस्या (white)
बुचला / धतूरा

★ विषमा भेद ६ – हरीतकी

उपविष	English Name	वर्णमा	शोधन	औषध मात्रा	विषप्रभाव	विषचिकित्सा	योग
कुचला	Nuxvomica (strychnos Nuxvoma)	विषतिन्दुक / कारस्कर / विषमुष्टिका / कालकूट कुपीलु / रज्जफल	कुचला बीज → सुखाकर → प्रस्तर पिंडतालक → कांजी → उष्ण	½ – 1 Ratti	धनुस्तम्भ / आक्षेपक	नागवल्ली स्वरस घृतपान	नवजीवनरस, अग्नितुण्डी (उदरकृमिरोग में)
अहिफेन	opium (Papaver somniferum)	आफू / नागफेन अफीम	* + आर्द्रक स्वरस → 7 भावना (Rk-21 check) (Rt)	¼ – 1 Ratti	—	हिंगुपत्र, पिप्पली त्वक्	अहिफेनासव, कर्पूरासव, कर्पूरा
धतूरा	Dhatura Stramonium	उन्मत / कृष्णफल	* गोदुग्ध → पोलायंत्र	बीज ¼ – ½ R. पत्रचूर्ण ½ – 1½ R	* स्वरभेद / Mydriasis तीव्र रेचक)	गोदुग्ध, समुद्रफल कल्क	त्रिभुवनकीर्ति रस * उन्मादगजांकुश रस
जमालगोटा	Croton seed (Croton tiglium)	रेचक / मलशोधी	Same as above	⅛ – ¼ R.		पक्षि / एलाचूर्ण	* वृद्धदारकेपीरस, जलोदरादि रस
भंग	Indian Hemp (Cannibis indica)	मातुलानी / विषमा माटिनी	* भांग पत्ते जल में भिगोकर रस निकाल – घृत में भर्जित	2 – 4 R.	मद, प्रलाप मूर्च्छा	तक्र / शुण्ठी / तण्डुलोदक	* जातिफलादि चूर्ण
गुञ्जा	abrus seed abrus precatorius fo legumineae	रक्तिका / तार्मिका काकणन्ती * उच्चटा *	गोदुग्ध → पोलायंत्र	1 – 1½ रत्ती	—	—	(C.C.–28) गुञ्जादि तैल गुञ्जाभद्र रस ↓ (in ऊष्ण जल or युष)

क्षार वर्ग

Ref. → (सु: सू० 11/4)

टंकण – Borax, स्रावक, सुहागा, रंग, टंगद, सौभाग्य
धर्माम्ल क्षारराज, रसघ्न, वर्णशोधन, श्वेतक्षार
(रस मानि पारद का मारण में use)

⇒ Antidot of वत्सनाभ

⇒ $Na_2B_4O_7 \cdot 10H_2O$

avilable in Borax lake (California)

भेद ⇒ श्वेत, नीलाभ* (श्रेष्ठ)

अशुद्ध टंकण के सेवन से वान्ति ∞ और भ्रान्ति (Hallucinogen) (अशुद्ध ताम्र, सप्तक के सेवन से भी)

शोधन → मर्दन or निर्पलीकरण

मात्रा → 1 – 2 Ratti

गुण → रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण वीर्य, गुरु, लेखन, रेचन, विषघ्न

Imp point →
→ टंकण is the best expectorant (कफ का छेदन करने वाला)
→ मूढ़गर्भ प्रवर्तक
→ स्थावर विष नाशक

SO+3O+S
सल्फ. सैंधवी टंकण

योग ⇒ महामृत्युञ्जय रस
आनन्दभैरव रस
प्रतापलंकेश्वर रस → (प्रसूतिका को दिया जाता है)*

यवक्षार

mix. of K^+ salt

पर्याय → जवाखार, शुक्रप्रद

विधि →

यव पंचांग स्वरस, क्वाथ
भस्म
↓
भस्म से 8 गुने पानी में घोलके
↓
after 24 hrs.
↓
स्वच्छ वस्त्र से छानकर (7 बार)
↓
प्राप्त क्षारजल को मन्दाग्नि में पाक
↓
प्राप्त क्षार Powder
↓
18 यवक्षार

PAGE NO.:
DATE:

use → अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, विबन्ध, विषरोग, अर्श, प्लीहोदर

मात्रा → 3-10 R०

सर्जिक्षार / खसर्जिक्षार

mix of K^+ salt

विधि → उष्णप्रिया (छोटी दुग्धपा) → same as above

मात्रा → 3-12 R०

गुण → same

use → प्लीहावृद्धि (~~apr~~), विबन्ध, अर्श ___ etc०

Some imp. shlokas –

PAGE NO.:
DATE:

रसशास्त्र का विवेच्य विषय or विषयवस्तु –

⇒ रसौपसलोहानि मन्त्रादि कणानि च।
शुद्धमर्थमपि लोहानां तन्त्रादि कणानि च।
शुद्धिः सत्वं द्रुतिभस्मकरणं च प्रवक्ष्यते ॥ (RRS)

परिभाषा लक्षण –

⇒ निगदानुक्तनेशोक्त संदिग्धार्थ प्रदीपिका
सुनिश्चितार्था विबुधैः परिभाषा निगद्यते। (RT)

⇒ भावाप –
द्रव्यान्तराविनिक्षेपो द्रुते वह्न्यादिके तु यः।
क्रियते स प्रतीवाप भावापश्च निगद्यते ॥ (RT)

⇒ निर्वाप –
ध्मात्वा देर्वह्नि तप्तस्य जलादौ मन्निषेचनम्।
स निर्वापः स्मृतश्चापि निषेकः स्नपनश्च तत् ॥ (RT)

⇒ ढालन –
संद्रावितस्य द्रव्यस्य द्रवे निक्षेपणन्तु यत्।
ढालनं तत्समुद्दिष्टं रसकर्म विशारदैः ॥ (RT)

⇒ भावना –
यच्चूर्णितस्य च ध्मात्वा देर्द्रवैः सम्प्रेष्य शोषणम्।
भावनां तन्मतं विज्ञैर्भावना च निगद्यते ॥ (RT)

सत्वपातन - क्षाराम्लमुक्तावर्के मुक्तं धमातकरकोष्णके।
यस्तती निर्गतिः सारः सत्वमित्याभिधीयते।

PAGE NO.:
DATE:

जारण -
द्रुतस्यसपरिणामो विडमन्त्रादि योगतः।
जारणेत्युच्यते तस्माः प्रकारा सप्त कोटिशः॥ (RRS)

मूर्च्छना -
कज्जलाभो मदा सूतो विधाय घनचापलम्।
मूर्च्छितस्तु तदा ज्ञेयो नानावर्णोऽपि च क्वचित्॥ (A.R)

शोधन -
अदिष्टैरौषधैः सार्द्धं क्रियते चेच्च पेषणादिकम्।
मलविच्छित्तये मत्तु शोधनं तदिहोच्यते॥ (RT)

मारण -
शोधितान लौहधात्वादि विमर्द्य स्वरसादिभिः।
अग्निसंयोगतो भस्मीकरणं मारणं स्मृतम्॥ (RRS)

भस्मीकरण -
लोहादीनां मृतानां वै शिष्टदोषापनुत्तये।
क्रियते मत्तु संस्कार भस्मीकरणं मतम्॥(RT)

लोहितीकरण -
भस्मीकरण से हुई वर्णहानि की क्षतिपूर्ति के लिए किए जाने वाली क्रिया
ex- अभ्रक के भस्मीकरण → काला रंग → लोहितीकरण → real colour

मृतलोह - तप्तमर्दनसंघृष्टं मन्नप्रखान्तरे विशेत् |
रेखापूर्ण मृतं लोहं तदुद्दिष्टं रेखापूर्णाभिधानकम् ||

PAGE NO:
DATE:

कज्जली -

धातुभिर्गन्धकाद्यैश्च निर्द्रवमर्दितौ समः |
सुश्लक्ष्णः कज्जलाभोऽसौ कज्जली त्यभिधीयते || (RRS)

द्रुति -

औषधाध्मानयोगेन लोहधात्वादिकं तथा |
सन्तिष्ठते द्रवाकारं सा द्रुतिः परिकीर्तिता || (RRS)

द्रुतिलक्षण -

निर्लेपत्वं द्रुतत्वं च तेजस्त्वं लघुता तथा |
असंमोहश्च सूतेन पञ्चधा द्रुतिलक्षणं || (RRS)

दग्धवर्ग

अम्लवर्ग -

जम्बीरं निम्बुकञ्चैव त्वम्लवेतसमम्लिका | नारङ्गं दाडिमञ्चैव वृक्षाम्लं बीजपूरकम् ||
चाङ्गेरी चणकाम्लञ्च कर्कन्धुः करमर्दकः | चुक्रिकाः चेति सामान्यादम्लवर्गः प्रकीर्तितः |

अपुनर्भव → गुडगुञ्जासुवस्पर्शद्वाभ्यां सद्मोषितम् |
नायाति सकृतिं ध्मानादपुनर्भवमुच्यते ||

वारितर - मृत तरति मत्तोमे लोहं वारितरं हि तत् ||

निरुत्थ - शैत्येण सह संयुक्तं ध्मातं सैन्धवेण नो त्यजेत्।
तदा निरुत्थमित्युक्तं लौहं तदपुनर्भवम्॥ (RRS)

PAGE NO.
DATE:

अम्लपंचक - (3 types of Nimbu + अम्लवेतस + गौली)

अम्लवेतस जम्बीर लुङ्गः नारङ्ग निम्बुकैः।
फलपञ्चाम्लकं ध्मातं कीर्तितञ्चाम्लपञ्चकम्। (RT)

रक्तवर्ग - (7) मञ्जिष्ठा कुङ्कुम लाक्षा दाडिमं रक्तचन्दनम्।
~~मुण्ड्या मधु~~ बन्धुकं करवीरं च रक्तवर्गो क्षमं भवेत्। (RRS)

श्वेतवर्ग - तगरः कुटजः कुन्दो मुण्ड्या जीवन्तिका तथा।
सितम्भोरुह कन्दश्च श्वेतवर्गः उदाहृतः॥ (RRS)
(श्वेतैकमल पुष्प)

क्षीरत्रयं - (अर्कदुग्ध)
अर्कक्षीरं वटक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथैव च
क्षीरत्रयमिति ध्मातं मारणादौ प्रशस्यते॥

मधुरत्रयं / त्रिमधुर / मधुरत्रिक - [घृत, गुड, मधु]

पञ्चमृत्तिका - (सैन्धव लवण)
इष्टिका गैरिकं लोणं भस्म वल्मीकमृत्तिका।
रसप्रयोगकुशलैः कीर्तिताः पञ्चमृत्तिकाः॥ (RRS)

Note - अमृतीकरण के लिए पञ्चामृत का use किया जाता है।

PAGE NO.:
DATE:

पञ्चगव्य -

गव्यक्षीरं दधि घृतं गोमूत्रं गोमयं तथा।
एकत्रमोलितं तुल्यं पञ्चगव्यमिहोच्यते ॥ (Rt)

पंचामृत -

गव्यं क्षीरं दधि घृतं माक्षिकञ्चाप्य शार्करा।
पञ्चामृतं समाख्यातं रसकर्म प्रसाधकम् ॥ (Rt)

क्षारद्वय	क्षारत्रय	क्षारपञ्चक
सर्जिक्षार यवक्षार	क्षारद्वय + टंकण	पलाशमुष्कक क्षारौ यवक्षारः सुवर्चिका तिलनालोद्भवः क्षारः संमुक्तं क्षारपञ्चकम् (Rt)

क्षाराष्टक - (अपामार्ग)
(अरुर) - सुधापलाशशिखरैर चित्रार्कतिलनालजाः।
स्वर्जिका यावशूकश्च क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ (Rt)

श्रावकगण	मित्रपञ्चक -
(मित्रपञ्चक + गुड)	माक्षं गुडप्राप्य सौभाग्यं क्षौद्रंच पुरसंज्ञकः एतत्तु मिलितं विद्यान्मित्रपञ्चकमुच्यते ॥ (Rt)

सैन्धवं सौवर्चलं चैव विडं सामुद्रकं गडम् ।
रूक्षद्वित्रिस्तुः पञ्चलवणानि क्रमात् विदुः ॥

लवणपञ्चक - सैन्धव लवण, सामुद्र लवण, विड्लवण, सौवर्चललवण
रोमक लवण

पारद प्रकरण

रस -
— रसनात् सर्वधातूनां रस इतिभिधीयते ।
जराऽऽमृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ॥ (RRS)

रसेन्द्र -
— रसौपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इति कीर्तितः । (RRS)

सूत -
— देहलौहमणीं सिद्धिं सूते सूतस्ततः स्मृतः । (RRS)

पारद - रौंगपङ्क्तिभिन्नानां पारदानाञ्च पारदः । (RRS)

मिश्रक — सर्वधातुगतं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति ।
तस्मात् स मिश्रकः प्रोक्तो नानारूपफलप्रदः ॥ (RRS)

PAGE NO.:
DATE:

पारद का स्वरूप -

गलदरूपनिभम्-

हीरकद्युतिसंकाशं प्रमाणाद् हीरकात् क्वचित्।
क्वचित पर्पटिकभासं गलदरूपनिभं क्वचित्।

प्रमथ्या

प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यफलात् कल्कीकृताच्छृतात्।
तैर्भे ऽष्टगुणिते तस्माः पानमाहुः पलद्वयम् ॥
(श्रा० सं० म० ख० २/१५०)

- दोषों की मध्यमावस्था में प्रयोग
- दीपन - पाचन विशेष कषाय कल्पना
- द्रव्य का कल्क बनाकर क्वाथ करने से प्राप्त

PAGE NO.:
DATE:

पंचविध कषाय कल्पना -

पंचविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा,- स्वरसः, कल्कः, शृतः शीतः, फाण्टः, कषाय इति। (च० सू० 4/7)

⇒ fundamental principles of Bhaishajya Kalpna

PAGE NO.:
DATE: 1/1/19

(1) परिभाषा एवं मान
(2) अनुक्त या विशेषोक्त ग्रहण
(3) औषधि द्रव्य की विशिष्टता
(4) पञ्चविध कषाय कल्पना
(5) द्रव्य, स्थिति रस, गुण, वीर्य, विपाक तथा प्रभाव
(6) संस्कार (गुणान्तराधान)
(7) भैषज्य योगों का नामकरण -

परिभाषा of मान

अमुक्तानुक्त लेशोक्त संदिग्धार्थ प्रकाशिका:।
परिभाषा: प्रकथ्यन्ते दीपीभूता: सुनिश्चिता:॥

मान की महत्वता -

न मानेन विना मुक्तिर्द्रव्याणां प्राप्यते क्वचित्।
अत: प्रयोग कार्त्स्न्यर्थं मानमत्रोच्यते मया।

(SS Pkh, 1/14)

औषधि द्रव्य की विशिष्टता -

बहुता तत्र योगित्वमनेकविध कल्पना
संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते (च०सू०

स्नुही क्षार

PAGE NO.:
DATE:

use

तीक्ष्ण, सर्वउदररोगनाशक, अग्निदीपक, गुल्म, शोथ, विसूचिका, अपच, शूल, मकृद्दोष, श्वासरोगनाशक

q/t (RT)

use	अनुपान
विसूचिका, अपच, पक्वगुल्म, वह्नी, उपशूल	+ द्राक्षभस्म, स्वर्जिक्षारयुक्त नवक्षार के साथ
शोथ, प्लीहावृद्धि, उदररोग	→ त्रिलवण, त्रिक्षार से
श्वासरोग में	→ त्रिकटु + मधु
अग्निमांद्य, यकृतरोग, प्लीहारोग, उदररोग	→ त्रिफला चूर्ण, सैन्धव चूर्ण एवं चित्रकचूर्ण

क्षारसूत्र

use → अर्श, भगन्दर, नाडीव्रण & अर्बुद (सर्वप्रथम - चक्रदत्त + वर्णि)

"भावितं रजनीचूर्णैः स्नुहीक्षीरे पुनः पुनः।
बन्धनात् सुदृढं सूत्रं भिनत्त्यर्शो भगन्दरम्॥" (च० द० अर्श/५५)

निर्माणविधि -

स्नुही क्षार + हरिद्रा चूर्ण (समभाग) —dry→ diped into than new solution

↕ diped for 24 hr.

कार्पास सूत्र or मज्जन्तु धागा

↓

7 बार भावित कर शुष्क कर

प्राप्त सूत्र ←

PAGE NO.:
DATE:

क्षार के गुण (10)

"तीक्ष्णोष्णौ लघुरुक्षश्च क्लेदी पक्ता विदारणः
दाहनौ दीपनश्छेत्ता सर्वः क्षारोऽग्निसन्निभः॥" (चक्र)

खरमञ्जरिक्षार / अपामार्गक्षार / मञ्जरक्षार / किणिक्षार

1 kg. अपामार्ग पञ्चाङ्ग → लोहे की कड़ाई में जलाकर भस्म बना ले

↓

भस्म + 4 गुना पानी

↓

Next day → 3-4 बार छानकर

↓ or

क्षारोदक को मन्दाग्नि में पकाना

↓

गाढ़ पङ्कवत्

↓

क्षार प्राप्त

↓

(white colour)

Uses - according to (RT)

श्वास → अनुपान मधु

वाधिरता → म. सिद्ध तैल का use (कर्णपूरण)

उदरशूल व आध्मान → त्रिकटु, अजवाइन, व उष्ण जल से

जीर्णसिङ्गार्श → समभाग हरताल व घृत के साथ लेप

श्वित्र → समभाग मनःशिला व गोमूत्र

मूत्रकृच्छ्र & अश्मरी → यवक्षार मिलाकर जल में

गुल्म व प्लीहा → त्रिकटु चूर्ण व सैन्धव चूर्ण

सावधानियाँ -

(1) द्रव्य शुष्क
(2) अच्छी प्रकार जलाकर → भस्म निर्माण (CX)
(3) मरुभूमि पर पुकाना
(4) काँचपात्र में रखकर ~~सुखाना चाहिए~~ (क्षार गीला न हो)
(5) क्षार प्रतिक्रिया न करे पात्र के साथ

मात्रा - 2-8 Ratti (250mg - 1g)

महत्व or उपयोग →
or गुण

① सर्वे क्षाराः मलघ्नाः (सार्णव 5/43)
(सभी क्षार मलनाशक होते हैं)
② सभी क्षार सामान्यतः तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्णवीर्य, दाहकारक होते हैं
③ यह गुल्म, अर्श, ग्रहणी रोग, प्लीहावृद्धि, मूत्रकृच्छ्र तथा अश्मरी आदि रोग नष्ट होते हैं
④ बाह्य तथा अभ्यन्तर कृमि दोनों नष्ट
⑤ दीपन पाचक
(व्रणशोथ को पकाने वाला एवं व्रणशोथ, विद्रधि आदि को गलाकर फाड़ने वाला)
⑥ व्रणों का शोधन एवं रोपण करते हैं
⑦ मूत्रल

PAGE: 10 - 9 जनवरी Sunday
DATE:

क्षार के भेद (3)

प्राप्ति के आधार (2)
(1) खनिज (ex- खट)
(2) वानस्पतिज (ex- यवक्षार, कमू)

प्रयोग के आधार (2)
(1) प्रतिसारणीय
- मृदु
- मध्य
- तीक्ष्ण

(2) पानीय क्षार (क्वाथवत)

वर्ग के आधार (5)
(1) क्षारद्रव्य (ex- सम)
(2) क्षारलवण (समट)
(3) क्षारपञ्चक (समसुपत्ति)
(4) क्षाराष्टक (समतिसुपचिआ)

क्षार निर्माण विधि

Raw material काष्ठौषधि

↓

कड़ाही में भस्म

↓

भस्म + 4गुना पानी (हाथ से मिलाकर

↓ Next day

3-4 बार छानकर

↓

प्राप्त जल को मन्दाग्नि पर गाढ़ा कर

↓

भातपशुद्ध

↓

क्षार प्राप्त

क्षार कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

Ref. → सु.सू.

Def. "तत्र क्षरणात् क्षरणनाद्वा क्षारः" (सु.सू. 11/4)

अर्थात् क्षरण या क्षणन कर्म करने वाले द्रव्यों को क्षार कहा जाता है।

or

दूषित माँस को काँटने अथवा त्वचा, माँस आदि का विनाश करने के कारण क्षार कहलाता है।

(Que क्षार को रस न मानकर द्रव्य मानने का कारण?)

आ.च. ने क्षार को द्रव्य माना है क्योंकि -

(1) यह अनेक रसों से उत्पन्न है इसमें कटु, लवणादि रस होते हैं।

(2) यह इन्द्रियों से ग्रहण करने युक्त विषयों से संयुक्त है।
स्पर्श → शीत, गंध → विस्रगंधी, दर्शन - श्वेत, रस - कटु or लवण

(3) संस्कार या साधन द्वारा उत्पन्न

अतः क्षार को द्रव्य माना जाता है।

वा. चक्रपाणि → जो नीचे की ओर गमन करे वो - क्षार
∵ गमन → द्रव्य का गुण है अर्थात अतः
क्षार एक द्रव्य है।

"कटुतिलरुतीक्ष्णक" → कटु
रस गुण वीर्य → विपाक

PAGE NO.:
DATE:

अगरु
अपामार्ग
अर्क
श्वित्रघ्नु
वृद्धदारु
गुग्गुलु
कण्टकारी
त्रिवृत
मवानी
पर्णिमवानी not in syllabus
पारसिक मवानी (ल० तीक्ष्ण) (−)
अजमोदा
कंकोल
करवीर
चन्द्रशूर
शतपुष्पा
कालाजाजी

कुपीलु
त्वक
वृक्ष → रस→मधुर (+) कटु

लांगली
पुष्करमूल
शटी short drug → कषाय (+) रुक्ष (−)
कस्तूरी
प्रतिविषा
वचा

इन्द्रवारुणी ग्रु- कटु (−)

सप्तपर्ण
शिरीष → मधुर (+) → कटु convert + कषाय
गुग्गुलु

तगर → कषाय, स्निग्ध (+) तीक्ष्ण (−), रुक्ष (−)
विडंग → तिक्त (−), कषाय (+)
चित्रक → तिक्त (−)
कम्पिल्लक → तिक्त (−)

tricks

PAGE NO.:
DATE:

Step 1st

अगर आप मार्ग में अर्क जाए
1 2 3
तो शिव - वृद्धी गोल कण्टकारी उठाए
4 5 6 7

Step IInd

मित्र तीनो भवनो मे आप वंकोल कवीर को
8 9,10,11 12 13 14

चन्द्र मुक्त शतपुष्पा दी
15 16

Step IIIrd

कर्ण 17 तुपील् 18 को त्वचा 19 पर मधुर 20 कुष्ठ हुआ
रक्त लांगली 21 पुष्कर 22 कमीने शट 23 करञ्जो 24 त 25 प्रतीफल को 26 उन्माद

Step 4

कट 27 इन्द्र 28 ने फसकर सप्तधिरीष 29 गुंजा 30 उपाई

नगर 31 विडंग 32 चित्रक 33 काँपने 34 लगे

35

PAGE NO.:
DATE:

घृतमूर्च्छना

गौघृत (1 प्रस्थ - 64 तोला)

Δ ↓ चतुर्थांश ×

त्रिफला / हरिद्रा / भार्गीमोक्ष (पक्वकुट)

प्रत्येक 1-1 पल

धातु - complete

लोह ?

तत्पुरुष

काकुस्थड - ये निषेध पारद सेवनकाल में and also सौवर्चि सेवन काल में

काकुस्थ + कल, ककड़ी, कार्वेलक

लौह के पर्याय, विधि, वर्ण, त्रिविधिकर्म

भानु → पुट

↓ स्थायी

लोह-चूर्ण

↓

मातृ + धात्री + त्रि. क्वाथ

↓

मातृपद्धति

↓

मर्दन

त्रिफला क्वाथ (स्थायी) 6 गुना

↓ अपर (स्थायी)

↓ समभाग

प्रक्षालन

↓

सुखाकर

PAGE NO.:
DATE:

उपर → शेमसेप्तन (हस्तिदंतमसी 1/4 तोला + रसांजन 1/4 तोला + गोमूत्र)

त्रिफलामसी → त्रिफला → शराव संपुट → मध्यपुट → मसी

उपर → मंजन, दंतशोधनार्थ

स्नेहकल्पना

Ref. → च० सं० / शा० सं० / AH / सु०चि० / भै०र० / यो०र०

स्नेहयोनि → ① प्राणिज
② स्थावर

स्नेहभेद / प्रकार → ① घृत ② तैल ③ वसा ④ मज्जा

परिभाषा → घृत / तैल मूर्च्छनोपरांत, स्वरस / कल्क / क्वाथ / दुग्ध आदि के साथ सम्यक पाक करना स्नेह कल्पना कहलाती है।

प्रयोग – चरक → 1 वर्ष के बाद, सुश्रुत → सद्यः प्रयोग

मात्रा – चूर्णमात्रा - 1 तुला (100 पल)

रोगाधिकार – चरक – मद्यासव
सुश्रुत – महाकुष्ठ
अष्टांगहृदय – उपदंश

– मसी कल्पना –

Ref. – सु० सं०

परिभाषा – आगम + औद्भिज द्रव्यों को जलाकर (शराव संपुट) ↓ अंतर्धूम पुटपक्व कृष्ण वर्ण की भस्म प्राप्त करना मसी कल्पना कहलाती है।

Ex – दंतिदंतमसी, मयूरपिच्छमसी, मृगशृंग भस्ममसी।

(1) दंतिदंतमसी – Ref. → भावप्रकाश

दंतिदंत चूर्ण
↓
शराव सम्पुट
↓
लघु पुट
↓
स्वांगशीत
↓
मर्दन
↓
कृष्ण वर्ण मसी

भस्मकृति

PAGE NO.: 4
DATE:

भस्मकृति → भस् + कृति
↓ लौह ↓ चूर्ण

भस्मकृति शब्द का प्रयोग 8 वर्णि चक्र में है (च० चि०) जबकि भस्मकृति कल्पना का विस्तृत वर्णि सु० सं० में है (सु० सू० सं०)

Method →

according to भस्म आचार्य

लौह पत्र
↓ Δ Red Hot
क्रमशः 20 बार निर्वापण
(त्रिफलाक्वाथ / इंदुखी क्षार / किंचुक क्षार / गोमूत्र)
↓
1 वर्ष तक धान्यराशि में रखकर (चावल, गेहूँ)
↓
मर्दन कर चूर्ण बनाना

acc. to सुश्रुताचार्य

लौह पत्र + पंचलवणलेप
↓
16 बार त्रिफलाक्वाथ में निर्वापण
↓
16 बार Δ आलसाटादिगण के द्रव्य में निर्वापण
↓
मर्दन कर चूर्ण बनाना

PAGE NO.:
DATE:

हरिद्राखंड (granules पुरुष में)

Ref. – B.R. (उर्ध्वजत्रुगतरोग urdhvajatruga) माधवनिदान में वर्णित

घटक – कच्ची हरिद्रा – 750 gm द्राक्षा – 2.5 Kg.
घृत – 280 gm.
गोदुग्ध – 3 Lit.

प्रक्षेप द्रव्य –
त्रिकटु
त्रिफला
त्रिपाट
त्रिमद
लौहभस्म

method – हरिद्रा + घृत
↓Δ
add water, milk, chini
↓
add prachapya dravya
↓
हरिद्राखंड in granules form

मात्रा – 1/2 तोला
अनुपान – उष्णोदक
रोगाधिकार – उर्ध्वगत रक्तपित्त, कण्डू, कोठ, कृमिरोग

पाक कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

— सौभाग्य शुण्ठी पाक —

Ref. - B.R. सूतिका रोग प्रकरण

घटक - शुण्ठी चूर्ण - 1.5 Kg. शर्करा / चीनी → 1.8 K.g.
गोघृत - 320 gm.
गोदुग्ध - 1.5 L.

प्रक्षेप द्रव्य -

total ⑨

त्रिफला
त्रिकटु
त्रिजात
पाविन्री
जमपाल
→ 12gm. ←
अजमोदा
चेदनद्वय
धातकी
धान्य

method -

Take milk + Shunthi churng
↓ Δ
make pisthi
↓
add Ghrat
↓
mixture plaed in sugar syrup (चाशनी)
↓
Pak in mandagni
↓
add प्रक्षेप
↓
make pills of 1-1 Rati;

मात्रा → 1 तोला

अनुपान → अभाक्षीर

रोगाधिकार →
सूतिका रोग, योनिव्यापद, शुक्रदोष

PAGE NO.:
DATE: पृष्ठ सं. 6

J- मध्य वर्णी

Ex. → अर्क लवण (Ref. - BR)

अर्क पत्र + सैंधव लवण
↓
शराव संपुट
↓
गजपुट
↓
अर्क लवण (कपोत वर्ण)

मात्रा - 4 Ratti
अनुपान - उष्णोदक
रोगाधिकार - यकृत, प्लीहा रोग, उदर रोग, मंदाग्नि।

नारिकेल लवण

Ref. → R.T.

विधि →

नारियल (जल रहित, जल रहित)
↓
नेत्र से सैन्धव चूर्ण भिन्दर भरना
↓
नारियल व पत्र को कपड मिट्टी करना
↓
सुखाकर
↓
गजपुट / मध्यपुट → स्वांगशीत → नारियल के भंदर के लवण को

वर्ण - कृष्ण वर्ण
मात्रा - 4 g.
अनुपान - जल, पिप्पली चूर्ण, नवसादर, यवक्षार
रोगाधिकार - उदरशूल
विमर्श - मा. भावमिश्र ने सजल नारियल लि

हिंग्वाष्टक चूर्ण

Ref. - वैद्यक जीवन प्रकाश

घटक - त्रिकटुकअजमोदा सैन्धव जीरके द्वे।
समधरणधृतानाम् अष्टौ हिङ्गुभागः
* घृतमकवलभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेत
ज्वलयति जठराग्नि वातरोगाश्च हन्ति ॥

त्रिकटु, अजमोदा, सैन्धव, श्वेत जीरक, कृष्णजीरक, + हिंगु - 1/8
समभाग

रोग - वातरोग, मन्दाग्नि

लवण कल्पना

Ref. - RRS
type - 6

Ref. - भैषज्य रत्नावली
type - 8

अष्टांग लवण में मुख्य घटक सौवर्चल होता है। इसका रोगाधिकार कफज मदात्यय है।

परिभाषा - लवणको भर्कपत्र पर लेप कर या अम्लद्रव्यों के साथ संयोग कर लेप कर शराव सम्पुट के पश्चात् अग्नि संयोग कर लेप कर जो कृष्ण वर्ण का लवण प्राप्त होता है उस प्रक्रिया को लवण कल्पना कहलाती है।

PAGE NO.:
DATE:

सितोपलादि चूर्ण

Ref. → BR राज्मक्षमा प्रकरण ★(चरक चिकित्सा राज्मक्षमा प्रकरण)

घटक- सितोपलातगाक्षीरी पिप्पली बहुलत्वच छोटी इलाइची
अन्मादृक्वे द्विगुणित लेहमेत् क्षौद्रसर्पिषा (मधु + घी - अनुपान)
चूर्ण वा प्राशमेदेत्क्षुवासक्रास क्षमापहम्
सुप्तजिह्वारोचकिनं मन्दाग्नि पार्श्वशूलम
हस्तपादास दातेषु ज्वरे क्लै तथोल्वणे ॥ (BR)
(हाथ-पैर दात)

सितोपला (मिश्री)	16 भाग
तुगाक्षीरी	8 〃
पिप्पली	4 〃
छोटी इलाइची	2 〃
दालचीनी	1 〃

मात्रा → 1-5 माशा

अनुपान → मधु, घी

प्रयोग → आर्द्रकास

ज्योतिष्मती

PAGE NO.:
DATE:

तालीशादिचूर्ण

Ref. → चक्रदत्त

"तालीशपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली शुभा
मधोन्तरं भागवृद्धमा त्वगेलं च अर्द्धभागिकं
पिप्पलमष्टगुणा चात्र प्रदेया सितशर्करा
श्वासकासरुचिहरं तच्चूर्णं दीपनं परम्।"

(वृद्धि बताओ न गयी तो → 2x वृद्धि)

तालीशपत्रं	– 1	मेरा
मरिच	– 2	मेरा
शुण्ठी	– 3	साथ
पिप्पली	– 4	प्रिया
वंशलोचन	– 5	बना (दे चाहे)
इलाइची	– 1/2	भाटा
दालचीनी	– 1/2	दाल (आधी हो जाए)
चीनी	– 8 गुना पिप्पली के। (main)	चीनी (8x मंहगी हो जाएगी)

मात्रा – 1–5 माशा
अनुपान – मधु, वीर्य
प्रयोग – श्वास, कास, अरुचि

काकुण्डकी

नागरमोथा (मुस्ता)
↓
दीपन, पाचन

कूष्माण्ड → जिसके बीजों में कष्मा + ण्ड → पेठा
• बत्तीफलों में श्रेष्ठ
→ पक्व & अपक्व → juice
↓
sweet sour

PAGE NO.:
DATE:

शंखशोधन

mainly → उदरोगहर

E.N. → Conch shell
Chemical name → $CaCO_3$

दक्षिणावर्त → पूजा-पाठ में ✓
वामावर्त → use as a medicinal prpration

शोधन → नीबू स्वरस / जयन्ती स्वरस / तण्डुलीय स्वरस / कांजी
↙ 12 hr.
3 hr.

in दोलायंत्र → स्वेदन
↓
ऊष्णजल प्रक्षालन
↓
शोधित शंख

मात्रा – 2 रत्ती
अनुपान → Hot water
use → अग्निमांद्य
अम्लपित्त
ग्रहणी

mainly उदररोग

मारण

शोधित शंख
↓
शराव सम्पुट
↓
पुट in गजपुट
↓
powder form + Aloevera भावना
↓
पर्पटीकरण
↓
गजपुट
↓
भस्म उत्तम

चूर्ण कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

Seives & shakers

⇒ Consist of circular from made up of wooden or metal, with a wire clock of cu., stainless steal silk, or nylom. Such seives given a affidative NO.. Number indicate NO. of meshes's of stand - ard diameter of present in 2.54 cm.2

for exam. → 10 No. seive have – 10 meshes in 2.54 cm^2.

S.No	Seive No.	Use's
1	10	Coar's powder (greater मोटा)
2	60	modrate Coars powder
3	85	modrate fine powder
4	120	very fine powder

imp. of seives →
Size sepration
Size reduction
to increare absorbtion
to —— the afficacy
used for purification process

चूर्ण कल्पना

PAGE NO.:
DATE:

Ref.→ शार्ङ्गधर संहिता मध्यम खण्ड (6/1)

· चूर्ण कल्पना कल्क कल्पना के अन्तर्गत आती है।

Def.→ ✓ अमतं शुष्कं मत् द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्।
तत्स्याच्चूर्ण रजः क्षोदस्तन्मात्रा कर्षसम्मिता।
(12g)

Mom →

शुष्क द्रव्य
↓ in श्लक्ष्णता or pulverised
चूर्ण
↓
कपड़ा छानकर or sieves
↓
चूर्ण तैयार

मात्रा → वीर्य
मृदुवीर्य → 12g. ← ~~or अल्पवीर्य~~ उत्तमतः
• मध्यवीर्य → 12 1/2 ← मध्यम
तीक्ष्णवीर्य → 12/4 ← अल्प वा

Normally → 3-6g. in practice

प्रक्षेप → गुड़ → समभाग
घी, तैल, मधु, शर्करा → 2गुण
हींग → भर्जित (घी के साथ) की हुई

द्रव = ~~पञ्चगुण~~
अनुपान → वा V → उपल
P → 2पल
K → 1 पल

~~9985248473~~

PAGE NO.: 4

DATE:

विशेष शोधन

पादप दोष	शोधन द्रव्य	
	9/to RRS	9/to RT
विष	चित्रकमूल	त्रिफला
व्रीहि	त्रिफला	चित्रक मूल
मल	कुमारी स्वरस	अमलवेतस (आरग्वध)
नाग	मृद्भूम + ईष्टिका चूर्ण + हरिद्रा + ऊन	-
वंग	इन्द्रवारुणी, अंकोल, हरिद्रा चूर्ण	-
चापल्य	कृष्णधतूर बीज / पंचांग	-
मसधातु	मोक्षुर (त्रिकण्टक)	-
गिरि	त्रिकटु	-

चूर्ण में भावना परिणाम → जितने द्रव में औषध अच्छे से डूब जाए

Type of चूर्ण → Single powder

mixed → → अलग-2 Powder बनाकर बाद में mix

~~सावधानी → द्रव्य → धुला~~

~~- कपड़ा / 85 No. छनी से छानना~~

→

→ क्षार व लवण वाले चूर्णों को नहीं

→ गीले हाथ से नहीं छूना → डिब्बा बंद

→ कृमि आदि से दूषित द्रव्य का use नहीं

~~→ उपकरण साफ~~

evolution of Human ... 1100 ... HIV